एक सपना बुनता हूँ

श्रीवास्तव सूरज

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shrivastav Suraj 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-863-3

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: February 2026

अनुक्रमणिका

एक सपना बुनता हूँ 1
एक सपना बुनता हूँ 2
मेरा दे मिसाल 3
अपनी यादों को समझा लो 4
जीना है इसी का नाम 5
आग लगी है सीने में 8
एक अभिलाषा 9
ऐसा देश हमारा हो 10
कभी सोचा है 12
कभी सोचा है 13
दुनियाँ बदलेगी जब तुम बदलोगे 15
मुझे है जिज्ञासा 18
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ 20
चाहता है दिल 22
आज तक 24
डर लगता है 25
दुनियाँ इस कदर बदल रहा है 26
हम साथ-साथ हैं 28
हमारी मंजिल तो आसमां है 31
मैं अधूरा हूँ उसके बिना 32
हे भगवान ! 34
जिंदगी का सफर कितना अलबेला है 37
गुरु जी कहते हैं 39
क्या गजब इंसान है 40

मैं अच्छा हूँ 42
मैं लेखक ही बनूँगा 43
माता-पिता की सेवा करो...45
मैं आशिक हूँ 47
काश मेरा भी यार होता 48
पर्यावरण बचाओ 50
सलामत रहे दोस्ताना हमारा 52
मेरा और उसका रिश्ता...54
सिर्फ वक्त ही तो बदला है...56
स्त्री 57
हम बालक हैं नए युग के 59
राज है बहुत छुपे 61
जीवन है एक यात्रा...63
जब से मैं प्रदेश आया हूँ...64
एक दिन...66
मेरे खुदा...67
दर्द भरा है इस जीवन में...68
ए-जिंदगी 69
उम्मीद ए जिंदगी 70
मेरे जैसा दिवाना...71
ये जिंदगी है...72
कभी खुशी कभी गम...73
खुद पर रख तू भरोसा 75
पहला-पहला प्यार था 77
मेरी माँ..79
मेरी माँ..80
चार चाँद लगे हैं...81
क्यों गुमसुम है वादियाँ...83

पता नही 84
मेरे सपने मेरे मंजिल 85
जरूरी है 87
कुछ सोचो 89
सिर्फ तुम 90
अपने हो गए पराये 92
मजबूरीयों के मंजर 93
लौटेंगे हम 94
तेरे बगैर 95
मैं कितना नादान था 97
एक सितारा टूट गया 99
प्रकृति के प्रकोप 100
चाहत है या ख्वाब है 101
नया साल 102
मैं पानी हूँ 103
तू मेरी चाँद है 104
मेरा बचपन कितना प्यारा था 105
चंदा 107
वह किसान 109
उसी को गाता हूँ 111
सब सोता है तो सोने दे 113
वो मुझे प्यार करता है 115
दीया और बाती 116
बेबसी के आलम 117
उड़ान 118
सिर्फ तुम्हें पाना है 119
क्या वो भटका मुसाफ़िर है 121
कोरोना - एक बीमारी 123

काश मेरा बचपन ठहर जाता 125
परिंदे सोच में हैं...126
जिगरी दोस्त..127
मिट्टी का चूल्हा...128
जिंदगी की सफर शानदार होनी चाहिए...129
मुस्कुराना भी तो जिंदगी की जरूरत है 130
मुझे लहरों से टकराना है...131
यहाँ सब की दुनियां अलग है...132
अपने तकदीर को आजमाना चाहिए...133
जिंदगी जख्म है...134
जीवन बदल गया 135
जून तुम्हारा स्वागत है..136
मैं चैन से मर पाता 137
सुकून मिलता है...138
शरीर से आत्मा निकल रहा है..139
शायरियाँ...140
Motivational quotes 148

एक सपना बुनता हूँ

एक सपना बुनता हूँ

लिखता हूँ मिटाता हूँ अपने तकदीर की लकीर
मैं अपने किस्मत को बदलना चाहता हूँ
रेगिस्तान की सरजमीं पर अरमानों का महल बनाता हूँ
मंजिल पाना आसान नहीं है इसलिए मैं संघर्ष को चुनता हूँ
सोने से पहले हर दिन मैं एक सपना बुनता हूँ

मलाल नही है मुझे कि मिलेगा क्या
दुनियाँ अपनाएगी या ठुकरा दिया जाऊंगा
कोशिश करता हूँ हर घड़ी कुछ नया करने की
मैं मस्त मगन राही सिर्फ अपने मन की सुनता हूँ
सोने से पहले हर दिन मैं एक सपना बुनता हूँ

आसमां को पाने के लिए हाथ रोज बढ़ाता हूँ
मैं गगन में सैर करना चाहता हूँ
लाना है सितारों को जमीं पर
अम्बर से ये इजाजत हर रोज माँगता हूँ
सोने से पहले हर दिन मैं एक सपना बुनता हूँ

डरता हूँ घबराता हूँ कभी गिरता तो कभी संभलता हूँ
मुश्किलें कितना भी हो मगर हिम्मत नही हारता हूँ
करता हूँ कड़ी मेहनत मंजिल को पाने के लिए
रोज सवेरे सफर पे निकल जाता हूँ
सोने से पहले हर दिन मैं एक सपना बुनता हूँ

मेरा दे मिसाल

दुनियाँ में आए हैं तो कुछ करके जाना है
थोड़ी सी-इज्जत थोड़ा सा-नाम कमाना है

अपनी बाजी को तो यहाँ हर कोई जीतता है
मगर हर किसी की खास पहचान नही
मुझे तो अपना पहचान बनाना है
थोड़ी सी-इज्जत थोड़ा सा-नाम कमाना है

दुनियाँ मुझे याद रखे, ऐसा करतब दिखाना है
मैं भी हूँ खुदा के काबिल सबको मुझे बताना है
गर्व हो मुझ पर सारे जहां को कुछ ऐसा करके जाना है
थोड़ी सी-इज्जत थोड़ा सा-नाम कमाना है

मेरा दे मिसाल एक दिन जमाने के लोग
हर कोई बनना चाहे मेरे जैसा मैं सबका आदर्श बनू
इसके खातिर तूफ़ानों से भी मुझे टकराना है
थोड़ी सी-इज्जत थोड़ा सा-नाम कमाना है

अपनी यादों को समझा लो

सुनो ,

अपनी यादों को समझा लो हर जगह परेशान करते रहता है

एक पल के लिए भी तुम्हें भुलाना चाहूँ तो फिर याद आ जाता है

खुशी में, गम में, दुख में, दर्द में, रात में, दिन में, सुबह में, शाम में

कोई भी ऐसा पल नही गुजरता है जब तेरी याद नही आती है

सोया रहता हूँ तो – सपनों में

हर सोच – हर सवालों में

ख्वाबों में – ख्यालों में

महफ़िल में – तन्हाईयों में

कैसे बताऊँ की

कब – कब याद आते हो तुम

जब - जब साँसे लेता हूँ

जब - जब दिल धड़कता है

जब - जब हवाएँ चलती है

जब – जब पलकें झपकती है

जब – जब मौसम बदलता है

मुझे पता है तेरी यादों का सिलसिला यूं ही चलता रहेगा

मेरे यादों में तेरा याद पलता रहेगा

शायद तुम भी समझ न पाओ मेरी चाहत को

शायद मैं भी अपनी मोहब्बत को बयां नहीं कर पाऊँगा

मगर जब तक है जान

सिर्फ तुमको ही चाहूँगा

जीना है इसी का नाम

क्या ये दुनियाँ है क्या है ये जिंदगानी
कभी उदासी तो कभी है खामोशी
कुछ पल ही टिकती है लबों पर हंसी
पल भर में निकलता है आँखों से आँसू

कभी लड़ते हैं खुद से तो कभी गैरों से झगड़ते हैं
कभी संभालते हैं गैरों को तो कभी खुद भटकने लगते हैं

खुशी टिकती नहीं है
गम हमेशा दस्तक देते रहता है
सुख मिलना नसीब में नही है
दुख का वर्षा हमेशा होते रहता है

कभी किसी से प्यार होता है
तो कभी नफरत भी हो जाता है

कभी तरसते रहते है किसी चीज को पाने के लिए
तो कभी बिना चाहे हर चीज मिल जाता है

मौसम की तरह बदलती रहती है जिंदगी
कभी सावन तो कभी पतझड़ होता है
रेगिस्तान में पानी बिना चिलचिलाती है जमीं

और समंदर में बादल बरस जाता है

कभी बनते हैं हम किसी का सहारा
तो कभी हमें कोई गिरा जाता है
कभी किसी के लिए समझौता करते हैं
तो कभी किसी के लिए नाता तोड़ देते हैं

जब भी खिलती है बागों में कलियाँ
कोई माली तोड़ जाता है
फूलों को कभी मंदिर में चढ़ाया जाता है तो
कभी उसी फूल को पैरों तले कुचल दिया जाता है
कभी किसी मोड़ पे कोई अजनबी मिल जाता है
तो किसी मोड़ पे कोई अपना बिछड़ जाता है
पता ही नहीं चलता है की जिंदगी जीना है कैसे
फिर भी किसी तरह जिंदगी के बोझ को ढोए जाते हैं

कभी बिना खाए नींद नही आती है
तो कभी भूखे सो जाते हैं
कभी-कभी मखमल पे भी सुकून नही मिलता है
तो कभी चटाई पे भी चैन से सो जाते हैं

कभी सुख कभी दुख कभी दर्द कभी तकलीफ
कभी खुशी कभी गम कभी होठों पे हंसी तो कभी आंखे नम
ये सब है जिंदगी का अल्पविराम
सच तो ये है की जीना है इसी का नाम

खुश रहो खुश रखो जहां भी रहो सलामत रहो
लापरवाही से न करो तुम कोई काम
इस उलझन में मत उलझो की जिंदगी क्या है
हर हाल में जीना सीखो जींदगी का है क्या काम
सच तो ये है की जीना है इसी का नाम

आग लगी है सीने में

दम तोड़ दिया तुमने अगर जीने से पहले
कैसे होगी मंजिल हासिल रास्ता तय करने से पहले

आरजू पूरी होती नही पसीना बहाने से पहले
कैसे पता चलेगा सफर सुहाना है या मुश्किल
सफर शुरू करने से पहले

बारिस होती है तो जमीं का प्यास बुझता है
बंजर जमीं में बीज का आस उगता है
फूलों में खुसबू आती नही खिलने से पहले
फल लगता नही मंजर से पहले

अगर शाम हुई है तो सवेरा भी होगा
आसमां में तारों का बसेरा भी होगा
चाँद चमकता नही दिन ढलने से पहले
सूरज निकलता नही रात गुजरने से पहले

अपने बढ़ते कदम को कौन रोकना चाहता है
राही आराम करते नही थकने से पहले
और...
आग लगी है सीने में तो दामन को थाम लो
अंधेरा, रौशन होता नही चिराग जलने से पहले

एक अभिलाषा

एक अभिलाषा तुम्हें पाने की
एक अभिलाषा तुम्हें खोने की है
एक अभिलाषा तुमसे दूर जाने की
एक अभिलाषा तुझमें सिमट जाने की है

एक अभिलाषा तुम्हारे खुले बालों को संवारने की
एक अभिलाषा तुम्हारी झुलफ़े बिखेरने की है
एक अभिलाषा तेरे आँखों में उतड़ने की
एक अभिलाषा तेरे नैनों में डूब जाने की है

एक अभिलाषा तेरे प्रेम में जीने की
एक अभिलाषा तेरे इश्क में फ़नाह हो जाने की है
एक अभिलाषा तुझे आयना बना लूं
एक अभिलाषा तेरी तस्वीर बनाने की है

एक अभिलाषा तुझे रुलाने की
एक अभिलाषा तुझे हँसाने की है
एक अभिलाषा तुझे मेंहदी लगाने की
एक अभिलाषा तेरे मांग को सिंदूर से सजाने की है

एक अभिलाषा तेरे बाहों में सोने की
एक अभिलाषा तेरे होठों को चूमने की है
एक अभिलाषा जीवन भर साथ निभाने की
एक अभिलाषा साथ मरने की है

ऐसा देश हमारा हो

न बटवारे की बात हो न झगड़े की हालात हो
जो भी हो सबके हित में हो
न किसी का ज्यादा फायदा न किसी का नुकसान हो
ऐसा देश हमारा हो

करे काम सब मिलकर जहां सौदा हो या कोई योजना हो
साथ दे पक्ष , विपक्ष का सत्ता में ऐसी भावना हो
ऐसा देश हमारा हो

जहां स्वच्छ हवा और हरियाली हो
बागों में फूलों की डाली हो
उन्नति हो विकास हो
मगर प्रकृति का न विनाश हो
ऐसा देश हमारा हो

धोखा न दे कोई किसी को हर किसी में ईमानदारी हो
बुराई का करे सब मिलकर सामना हर किसी में अच्छाई हो
ऐसा देश हमारा हो

धरती लगे स्वर्ग जहां, जन्नत से जो प्यारा हो
सूरज – चन्दा जैसे हो लोग जहां के
और जैसे गगन में चमकते तारा हो

ऐसा देश हमारा हो

बहू– बेटियाँ घर से बेखौफ निकले
हर अपराधी हर दरिंदे का विनाश हो
बिना दहेज के बेटियों का मांग सजे
बहुओं पर न कोई अत्याचार हो
ऐसा देश हमारा हो

पढ़ा – लिखा हो हर कोई
शिक्षा – संस्कृति और संस्कार का विकास हो
शिक्षा पाकर भी कोई सड़क पे न भटके
हर किसी के पास रोजगार हो
ऐसा देश हमारा हो

लड़े न कोई जात – पात के खातिर
न धर्म और मजहब पे विवाद हो
प्रेम – स्नेह हो सबके खातिर
हर किसी में भाईचारा हो
ऐसा देश हमारा हो

कभी सोचा है

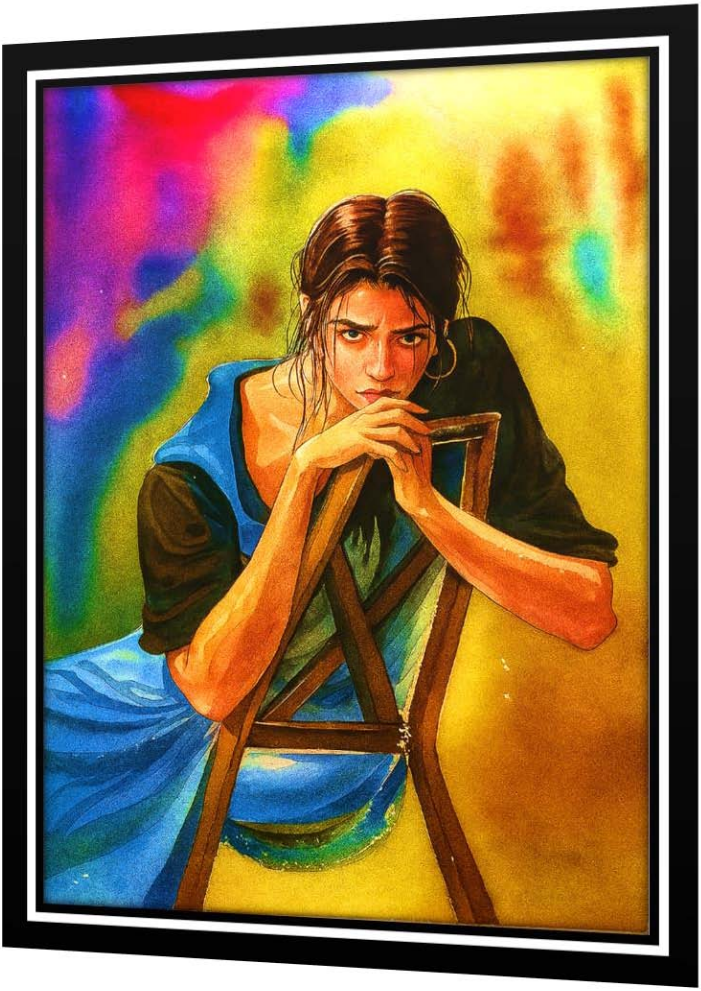

कभी सोचा है

कभी सोचा है
तेरी पलके थोड़ी सी भी नम होती है
तो मेरे आँखों से नदियों का धार बह जाता है
तू थोड़ा सा भी मायूस होता है
तो मेरे लब खामोश हो जाता है

कभी सोचा है
तू थोड़ा सा भी नाराज होता है
तो मेरी जान निकल जाती है
जब तेरे चेहरे पर उदासी आती है
तो मेरा अन्तरमन व्याकुल हो जाता है

कभी सोचा है
मैं तेरे साथ पूरी जिंदगी बिताना चाहता हूँ
मैं तुझे अपनी दुनियाँ बनाना चाहता हूँ
तेरे हर दर्द को सहने के लिए राजी हूँ
मैं तेरी चाहत में फ़नाह हो जाना चाहता हूँ

कभी सोचा है
मैं तुमसे क्या चाहता हूँ
यकीन मानो तेरे अलावा और कुछ नही चाहता हूँ
तेरे साथ सारी दुनियाँ का सैर करना चाहता हूँ

तेरे साथ आसमां में उड़ जाना चाहता हूँ
तेरा साथ मैं सातो जनम तक चाहता हूँ
और सातो जनम में मैं तेरे ही बाहों में मर जान चाहता हूँ

कभी सोचा है
मैं तुमसे क्या चाहता हूँ ....

दुनियाँ बदलेगी जब तुम बदलोगे

दुनियाँ बदलेगी जब तुम बदलोगे
बदलेगा सारा जमाना जब तुम बदलोगे
नीचे धरती बदलेगी ऊपर आसमां बदलेगा
जब तुम बदलोगे

गुस्सा करोगे तो नफरत मिलेगा
प्यार करो तो प्यार मिलेगा
हर एक इंसान बदलेगा
जब तुम बदलोगे

दुनियाँ बदलेगी जब तुम बदलोगे
नशा न करो बीमार न होगे
सफाई करो स्वस्थ्य रहोगे
चलते जहां स्वच्छता मिलेगा
जब तुम बदलोगे

साथ दोगे सहारा मिलेगा
खामोशी में उल्लास मिलेगा
तुम कभी उदास न होगे
सारा जहां खुशहाल मिलेगा
जब तुम बदलोगे

दुनियाँ बदलेगी जब तुम बदलोगे
बुरा न सोचो बुरा न होगा
अच्छाई करो अच्छा होगा
ईमानदार बनो वफादारी मिलेगी
जब तुम बदलोगे

दुख न दो दुखी न होगे
जुर्म करोगे मुजरिम बनोगे
हर जगह बेईमान मिलेगा
खुशियां बाटों सुखी रहोगे
हर होठों पे मुस्कान मिलेगा
जब तुम बदलोगे

दुनियाँ बदलेगी जब तुम बदलोगे
दोस्ती निभाओ दोस्त मिलेगा
गद्दार भी सुधर जाएगा
जब तुम बदलोगे

मत सोचो की क्या हो रहा है और क्या होगा
हुनर का कदर नही हर काम रिस्वत से हो रहा है
अच्छाई होगी बुराई भी मिटेगा
जब तुम बदलोगे

दुनियाँ बदलेगी जब तुम बदलोगे
सूरज बदलेगा चाँद बदलेगी

तारा बदलेगा जुगनू बदलेगी
एक दिन सारा ब्रह्मांड बदलेगा
जब तुम बदलोगे

मुझे है जिज्ञासा

जो कोई नही किया है जो किसी से नही हुआ है
जिसे करते करते थक गया है हर कोई
वह हर कठिन काम करने का
मुझे है जिज्ञासा

कभी नही घबराना है
सदा आगे बढ़ते जाना है
गिर कर उठना, उठ कर दौड़ना
आसमां में उड़ने का मुझे है जिज्ञासा

कुछ करने का कुछ बनने का
कहीं दूर निकलने का कहीं आगे बढ़ने का
मंजिल को पाने का हर मुश्किल से लड़ने का
मुझे है जिज्ञासा

मैंने ये ठाना है मुझे मंजिल को पाना है
असफलता पर घबराना नही है
सफलता की कोशिश करते रहना है
हार कर भी जीतने का
मुझे है जिज्ञासा

हालात से घबराना नहीं
हर तूफान से लड़ना है

जिससे नइयाँ पार न हो
उस दरियाँ को पार करने का
मुझे है जिज्ञासा

बिना कोशिश के कुछ होता नही
दरिया भी साहिल को पाता नही
जब तक कोई मेहनत करता नही
तब तक कामयाब वो होता नही
हर सपना हर अरमान को पूरा करने का
मुझे है जिज्ञासा

मैं वो बुझदिल नही जो ठोकर लगने पर घबरा जाऊं
किसी पत्थड़ को देख अपना राह बदल जाऊं
अपने इरादे मजबूत करने का हर आंधी से लड़ने का
मुझे है जिज्ञासा

खुद की राह पर चलता हूँ किसी की सलाह की जरूरत नही
दुनियाँ क्या सोचती है इस बात की मुझे कोई फिकर नही
आगे बढ़ना है तो आत्मविश्वाश रखना होगा
कभी नही भटकना है खुद से संभलने का
मुझे है जिज्ञासा

हालात से लड़कर अपनी कमजोरी को दूर कर
हौसला को मजबूत कर धैर्य से काम लेकर
एक दिन महान बनने का
मुझे है जिज्ञासा

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
कन्यादान का सौभाग्य तुम पाओ
किस्मत वाले हैं वो जिन्हे बेटी मिली
सुख का सागर मिला जब बेटी हुई
बेटियाँ किसी बेटे से कम है नही

बेटी बचाओ और बहू घर लाओ
बेटियों का कभी भी न गर्भपात कराओ
आजाद कर दो इनको न बाँधों इनकी हाथ
न लगाओ इनपर कोई पाबंद
बेटियों में भी है इतना दम
कर दे वो हर मुश्किल को आसान
बेटियाँ भी कुछ करके दिखा देगी
सबसे आगे निकलकर बता देगी
बेटियाँ किसी बेटे से कम है नही

बेटी बचाओ और घर-आँगन में खुशियां ले आओ
बेटी बचाओ और अपने घर से अँधेरों को दूर भगाओ
बेटियों से बढ़कर और कुछ अनमोल है नहीं
बेटियाँ किसी बेटे से कम है नहीं

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

दहेज के खातिर न बहुओं को जलाओ
बेटी अपना उड़ान लगा लेगी
बेटी सायना, कल्पना और लता बनकर बता देगी
सारे जग में नाम रौशन करा देगी
वो खुद की पहचान बना लेगी
बेटियाँ किसी बेटे से कम है नही

चाहता है दिल

चाहता है दिल
उड़ – उड़ जाऊं आसमां में सैर लगाऊं
कभी न थकू – कभी न रुकूं
चाहता है दिल दौड़ लगाऊं

पहाड़ी की इस चोटी से उस चोटी तक
बिना डरे मैं छलांग लगाऊं
बिना लड़खराएं बिना घबराए
चाहता है दिल मंजिल पाऊं

चाहता है दिल सपने सजाऊं
एक - दिन चाँद के उस पार जाऊं
अपने काबिलियत को सबको दिखाऊं
चाहता है दिल नाम कमाऊं

जो हो न सके वो भी करके दिखाऊं
कोशिश करके अंजाम बताऊं
मुश्किल को आसान बनाऊं
चाहता है दिल बिखरें अरमान फिर से सजाऊं

कभी न किसी से बैर करूं
बने न कोई दुश्मन मेरा

हर किसी से प्यार मिले
चाहता है दिल सम्मान मिले

कभी न कोई मुझ से बिछड़े
बैगाने भी मेरे पास रहे
अपनों से कभी दूर न जाऊं
चाहता है दिल साथ निभाऊं

हर किसी के दिल में रहूँ
हर कोई मुझे याद करे
जब तक रहे साथ हमारा
चाहता है दिल खुशहाल रहे

न चेहरे पर उदासी हो
न लबों पर खामोशी हो
आखें कभी नम न हो
चाहता है दिल
जीवन में कोई गम न हो

आज तक

रविवार को छुट्टी मनाया
किसी काम में रास न आया
सोमवार को सोचा कुछ करने को
मंगलवार को मूड नहीं था
बुधवार को बुद्धि न आया
गुरुवार तो वैसे ही गुजर गया
शुक्रवार को शुरू करना चाहा
शनिवार को समय नही मिला
कल , परसों , दिन , महीना ,साल ऐसे ही गुजरता रहा
पूरी जिंदगी निकल गई इसी ओल - झोल में
न रास्ता मिल पाया और न पहुँच पाया मंजिल तक
यानी जीवन में कुछ भी नही कर पाया मैं आज तक

डर लगता है

तुमसे दूर जाना चाहता हूँ
पर जुदाई से डर लगता है
तुम्हें खोना नही चाहता हूँ
मगर अपनाने से डर लगता है

तुम्हारे करीब आना चाहता हूँ
पर नजदीकियों से डर लगता है
तुम्हें रुलाना नहीं चाहता हूँ
मगर हँसाने से डर लगता है

मेरे धड़कन में बस्ती हो साँसे बनकर
मगर साँस लेने से डर लगता
मेरे आज में तुम हो
पर कल से डर लगता है

कैसे बताऊँ कितनी मोहब्बत है तुमसे
कैसे जताऊँ कितना प्यार करता हूँ तुमसे
मगर दुनियाँ न कर दे जुदा हमें , बस इस ख्याल से
तुम्हें बताने से और जमाने से डर लगता है

दुनियाँ इस कदर बदल रहा है

भलाई के बदले बुराई मिलता है
ईमानदारों से बेईमानी की जाती है
खुशी के बदले गम मिल रहा है
बेकसूरों को सताया जा रहा
दुनियाँ इस कदर बदल रहा है

छोटे – बड़ों को सम्मान नही करता है
दोस्त, दोस्त से दगा करता है
भाई – भाई में मेल नही है
बेटा बाप से झगड़ रहा है
दुनियाँ इस कदर बदल रहा है

सावन में भी पतझड़ होता है
कहीं भी पेड़ दिखाई नही देता है
कहीं भी हरियाली नहीं कहीं भी बागों में माली नही
बागों को उजाड़ कर महल बनाया जा रहा है
दुनियाँ इस कदर बदल रहा है

हर किसी को हर कोई भूल जाता है
जरूरत पड़ने पर ही याद आता है
अपना, अपनों से दूर हो रहा है
दुनियाँ इस कदर बदल रहा है

रिश्ते - नाते से भरोसा उठ गया है
हर किसी पर शक किया जाता है
गैरों की क्या बात करे जब अपना ही धोखा देता है
किसी को भी किसी पर भी विश्वाश नही हो रहा है
दुनियाँ इस कदर बदल रहा है

कैदी को सजा नही मिलता है
बेकसूर जेल में सरता है
चोरी करते हैं महल वाले
झोपड़ी वाले को दोषी ठहराया जा रहा है
दुनियाँ इस कदर बदल रहा है

कहीं पीने को पानी नही
तो कही पानी बर्बाद किया जा रहा है
कोई भूखा मर रहा है
तो कोई भोजन फेक रहा है
दुनियाँ इस कदर बदल रहा है

हम साथ-साथ हैं

हर खुशी हर गम में एक -दूजे के साथ हैं
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें है हम साथ-साथ हैं

सुबह से लेकर शाम तक दिन से लेकर रात तक
सूरज के ढलने से लेकर चाँद के निकलने तक
हर किस्से हर कहानी में हर गजल हर शायरी में
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें   है हम साथ - साथ हैं

जनवरी से लेकर दिसम्बर तक जमीं से लेकर अम्बर तक
हर सपना हर अरमानों में हर ख्वाहिस हर ख्यालों में
हर हसरत हर मन्नत में खुशियों भरा जन्नत में
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें है हम साथ – साथ हैं

गीत में संगीत में हर स्वर हर धुन में
हर जनम हर मरण में
इस जनम से अगले सात जनम में
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें है हम साथ-साथ हैं

पेपर और अखबार में हर साहित्य हर उपन्यास में
महफ़िल में भी और तन्हाईयों में भी
सुनी सड़क और शहनाइयों में भी
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें है हम साथ - साथ हैं

दिल में, धड़कती हुई धड़कन में
मन के मीत और प्रेम की प्रीत में
चाहत में यादों में चलती हुई साँसों में
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें है हम साथ-साथ हैं

प्यार में प्रेरणा में इश्क में आशिकी में
चाहतों और इबादतों में प्यार भरे लम्हातों में
मोहब्बत की हर एहसास में
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें है हम साथ-साथ हैं

बागों में बहारों में गुल में गुलिस्तां में
हर कली हर फूल में फूलों की महकती हर खुसबू में
नजर में और दुनियाँ के नजारों में
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें है हम साथ-साथ हैं

हर थकान हर आराम में हर राह में हर राहगीर में
हर हंसी हर मुस्कान में उदासी में खामोशी में
सावन और बरसात में प्यार में रुसवाई में
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें है हम साथ-साथ हैं

भविष्य में वर्तमान में नसीब और तकदीर में
हाथों की लकीर और रास्ते के फकीर में
जीवन के रेगिस्तान और जीवन के अंत कब्रिस्तान में
मैं तुझमें हूँ तू मुझमें है हम साथ – साथ हैं

हर मंजिल हर प्रवाज में हर बाजी हर सौगात में
हर   हार   और हर जीत में दुनियाँ के हर रीत में
मैं   तुझमें   हूँ तू मुझमें   है हम साथ - साथ हैं

हमारी मंजिल तो आसमां है

ये नही है हमारी दुनियाँ भटक रहे हैं जिसमें हम
शुरू करना है सफर पगडंडियों से
एक दिन फूलों से सजी राह पर चलना है
हमारी मंजिल तो आसमां है

बेसक मैं घबराता हूँ कभी – कभी भयभीत भी हो जाता हूँ
मगर मैं कमजोर नही मुझे तकलीफों से लड़ना है
हर मुश्किल को आसां करना है
हमारी मंजिल तो आसमां है

आज मैंने ठाना है मुझे मंजिल को पाना है
कोई शिकायत नही कोई बहाना नही बनाना है
सफर में आए कैसा भी मझधार
हर दरिया को पार कर जाना है
हमारी मंजिल तो आसमां है

हर नामुमकिन को मुमकिन बनाना है
हर इंतहान में सफल होना है
चीर कर पहाड़ों का सीना चट्टानों से टकराना है
हमारी मंजिल तो आसमां है

मैं अधूरा हूँ उसके बिना

खामोश हूँ खुशी में
महफिलों में भी तन्हा हूँ
उनको शायद खबर नही है
किस कदर उसके बिना मैं अधूरा हूँ
जैसे चन्दा बिना चकौर है

गुमसुम हूँ सोरगुल में
चारों तफ़र उदासी छाई है
अंधेरा हो गया है रौशनी में भी
उनको शायद खबर नही है
किस कदर उसके बिना मैं अधूरा हूँ
जैसे बिन दिया के बाती है

जिस्म है पर जान नही
अब जीवन में कोई अरमान नही
खत्म हो गए सारे सपने और ख्वाहिशें
उनको शायद खबर नही है
किस कदर उसके बिना मैं अधूरा हूँ
जैसे बिन मोती के माला है

स्वर है पर धुन नही
बाँसुरी में अब कोई संगीत नही

टूट गया है वीणा के तार
उनको शायद खबर नही है
किस कदर उसके बिना मैं अधूरा हूँ
जैसे बिन कान्हा के राधा है

कोई हमसफ़र नही है मेरे जीवन के सफर में
हर रास्ता हर मोड़ हर डगर सुनसान है
दरिया को साहिल न मिला समंदर भी बेईमान है
उनको शायद खबर नही है
किस कदर उसके बिना मैं अधूरा हूँ
जैसे बिन पानी के प्यासा है

हे भगवान !

क्यों बनाई ये दुनियाँ
क्यों है ये जमाना
तेरी बनाई हर चीज स्वयं में परिपूर्ण है
फिर लोग किस तलाश में भटक रहे हैं
हे भगवान !

हर कोई सुख चाहता है फिर क्यों दुख होता है
किसी को पसंद नहीं है की उसे तकलीफ हो
फिर क्यों दर्द सहता है
हे भगवान !

क्यों बनाई ये दुनियाँ
क्यों है ये जमाना
क्यों भाग रहे हैं लोग समंदर की खोज में
जब एक बूँद से प्यास बुझ जाता है
क्यों मरते है लोग मिट्टी की लड़ाई में
जिसे एक दिन मिट्टी में ही मिल जाना है
हे भगवान !

किसी को झोपड़ी तो किसी को महल है
कोई गरीब तो कोई अमीर है
कोई मजबूर तो कोई मशहूर है
ये तेरा करामात है या इंसानों के कर्मों का फल

हे भगवान !

तूने कैसा ये जुर्म किया
किसी को खुशी तो किसी को गम दिया
किसी को खामोश तो किसी को उदास किया
क्या गुनाह है इंसानों का क्या यही तेरा कानून है
हे भगवान !

क्यों बनाई ये दुनियाँ
क्यों है ये जमाना
कोई गर्मी से तो कोई ठंडी से
कोई बाढ़ से तो कोई रेगिस्तान से
हर कोई हर चीज से परेशान है
हे भगवान !

क्यों जन्म लेते हैं लोग
जब एक दिन मर ही जाना होता है
दुनियाँ से हर रिश्ता तोड़ जाना होता है
कहाँ से आता है वो और कहाँ चला जाता है
हे भगवान !

तू कहाँ रहता है तेरा पता क्या है
कहीं तो तेरा ठिकाना होगा या हर जगह तू रहता है
हर वस्तु में तेरा अंश है या हर स्थान पे तेरा बसेरा रहता है
हे भगवान !

क्यों बनाई ये दुनियाँ क्यों है ये जमाना

तेरे बनाए मूरत तुझे बेचता है मूर्ति बनाकर
तेरे नाम पर लोग धंधा कर रहा है
हर कोई लूट रहा है तेरा वास्ता देकर
कोई ज्योतिष तो कोई फकीर बनकर तुझे ही ठग रहा है
क्यों तूने ये इंसान बनाया और ये इंसानों की दुनियाँ
हे भगवान !

जिंदगी का सफर कितना अलबेला है

जिंदगी का सफर कितना अलबेला है
सुबह में शाम तो कभी शाम में सवेरा है
कभी करती है जुगनू अँधेरों को रौशन
तो कभी चिराग में भी अंधेरा है

जिंदगी का सफर कितना अलबेला है
कहीं गाँव तो कहीं शहर का मेला है
कैसे बयां करे कोई अपना दर्द
हर मोड़ पे यहाँ रिश्तों का झमेला है

कोई रूठा तो कोई टूटा है
हर कोई गुमसुम है हर कोई तन्हा है
मुस्कुराना तो बस एक बहाना है
जिंदगी का सफर कितना अलबेला है

जिंदगी का सफर कितना अलबेला है
कोई गैर है अपना तो कोई अपना है गैर
साथ निभाना जैसे कोई मजबूरी हो
रिश्तों का फायदा उठाने का ये जमाना है

मिले खुशी या गम मगर जीना है
चाहत यहाँ किसी की भी पूरी नही होती है

फिर भी अरमानों का महल बनाना है
कहीं खुशियों की महफ़िल
तो कहीं दुखों का मेला है
जिंदगी का सफर कितना अलबेला है

गुरु जी कहते हैं

कौन कहता है की तुम कुछ कर नही सकते
तुम कर तो सकते हो मगर कोशिश नही करते
मेरे गुरु जी कहते हैं यदि तुम कोशिश करते हो, तो
तुम वो भी कर सकते हो जो तुम कर नही सकते

कौन कहता है तुम आगे बढ़ नही सकते
तुम आगे बढ़ तो सकते हो मगर बढ़ने से हो डरते
मेरे गुरु जी कहते हैं यदि तुम डर को दूर करते हो, तो
तुम वहाँ तक बढ़ सकते हो जहां तक सोच नही सकते

कौन कहता है मंजिल को पाना है नामुमकिन
मंजिल को पाना नही नामुमकिन यदि तुम मान लो मुमकिन
मेरे गुरु जी कहते हैं मंजिल को पाना नही मुश्किल
तुम मंजिल पा तो सकते हो यदि सोचो नही मुश्किल

सपनों की यहाँ कोई क्लास नही होती
मेहनत के बिना अरमानों की नैया पार नही होती
जब तुम जीतना चाहते हो
तो फिर हार की बात नही होती

क्या गजब इंसान है

दर्द भरी दुनियाँ है दर्द भरी है इसकी कहानी
जिस पर होता है भरोसा वही देता है धोखा
गैरों की क्या बात करे जब अपना ही ठुकरा देता

जब बुरा वक्त होता है तो कोई साथ नही देता है
अच्छे वक्त में तो बेगाने भी पास होता है

जिंदा लोगों को रोटी नही मिलती है
और मुर्दों पर फूलों के हार चढ़ाए जाते हैं
दर-दर भटक रहे हैं लोग वीरानी राहों में
न कोई ठिकाना है न ही कोई सहारा है

बड़ी अजीब दास्तां है इंसानों की
जब कुछ अच्छा होता है तो ईश्वर को याद करते नहीं
और कुछ बुरा हो जाए तो भगवान को कोसतें हैं
किसी असहाय को कोई सहारा नहीं देता है
मगर रास्ते चलते ठोकड़ मार बेसहारों को गिराते हैं

आज तो ठीक से गुजरता नहीं,
कल कैसे बीतेंगे ये सोच कर घबराता है
कभी महफिलों का मौज लेता है
तो कभी तन्हाईयों में डूबा रहता है

खुद दौड़ना चाहता नहीं है पर औरों को भगाता है
दुख हो तो घबराता है सुख मिले तो इतराता है
अपनों के लिए समय नहीं रहता है
दूसरों के साथ घंटों गप्पे लड़ाता है

खुद संघर्ष करते नहीं है मगर पड़ोसी के सोहरत से जलते हैं
एक दूसरे पे विश्वाश रखते नहीं गलतफहमी के शिकार हो जाते हैं
गलतफहमी में फँसकर रिश्तों को बर्बाद कर जाते हैं

भूखे को कोई भोजन नहीं देता, पानी प्यासों से छिन लेता है
इंसानों की क्या रीत है क्या गजब का मीत है
बाप का बेटा पे अधिकार नहीं बेटा बाप को आदेश देता है
अन्धी माँ घर में रोटी बनाती है बेटियाँ सड़कों पे तमाशा करती है
सास का कहना बहू नहीं मानती बहू सास पे ही रोब जमाती है
बड़े – छोटो का भेद नही छोटा बड़े को ज्ञान सिखाता है
क्या गजब ये दुनियाँ है क्या गजब इंसान है

मैं अच्छा हूँ

मैं अच्छा हूँ खुद से ये वादा करो
दुनियाँ कितना भी बुरा कहे
उस पर ध्यान न दिया करो
लाख कमियाँ है तुम में तो क्या हुआ
खुद को बेहतर बनाने
की कोशिश ज्यादा करो

गिर गया तो उठना सीखो
धीरे – धीरे कदमों से आगे बढ़ते रहो
हार जाऊंगा ये सोचकर घबराओ मत
मंजिल पाने के लिए कड़ी मेहनत करते रहो

मुश्किलें सारी जलकर राख हो जाए
खुद को तपा कर सुलगती
आग बन जाओ तुम
और हौसला इतना बुलंद करो
की संकट का सीना चीरकर
अपनी बुलंदी पर पहुँच जाओ तुम

मैं लेखक ही बनूँगा

कभी जो बादल रोएगा
उसके छलकते आँसू को बयां करूंगा
कभी जो पत्थड़ को चोट लगेगा
उसके कराहट भरी दर्द को बयां करूंगा
और बागों में खिले फूलों की उदासी बयां करूंगा
मैं लेखक ही बनूँगा

पंछियों की चहचहाहट, समंदर की सिसकियाँ
सूरज का जलना और सर्द रातों में चाँद का ठिठुरना
हर किसी की बेबसी का आलम बयां करूंगा
मैं लेखक ही बनूँगा

माँ कि ममता, बेटी की विदाई का दर्द
बहन का प्यार और महबूब कि मोहब्बत
पिता का संघर्ष , दादा की कहानी का जिक्र करूंगा
मैं लेखक ही बनूँगा

हर बुराई, हर अच्छाई, असफलता के कारण
और सफलता का राज सबको बतलाऊँगा
मैं लेखक ही बनूँगा

कभी जो कान्हा बजाएगा बाँसुरी उसके प्रेम की भाषा को
राधा तक पहुंचाऊँगा, रूठे जो कभी प्यार में कोई
उसको मनाने का तरीका बताऊँगा
और हर किसी को मोहब्बत करना सिखाऊँगा
मैं लेखक ही बनूँगा

जब कभी मंजिल मुश्किल लगने लगे
जब कोई हिम्मत हार जाए
जब कोई रास्ता भटक जाए
हर मुसाफ़िर को मुकम्मल राह दिखाऊँगा
मैं लेखक ही बनूँगा

सही और गलत में फर्क करना
हमेशा सही राह पर चलना
धैर्य के साथ आगे बढ़ने का मंत्र बताऊँगा
मैं लेखक ही बनूँगा

माता-पिता की सेवा करो

माता हमारी करुणा की शागर पिता हमारे पालनहार
जिसे मिला ये दो वरदान जग में बना है वो महान
माता – पिता की सेवा करो ये है पुण्य का काम

जिसने तुम्हें जन्म दिया पाल – पोस कर बड़ा किया
उंगली पकड़ कर चलना सिखाया गिरने पर वो तुम्हें उठाया
जिसे मिला माता – पिता का आशीष जग में बना है वो महान
माता – पिता की सेवा करो ये है पुण्य का काम

माता – पिता है पालनहार ईश्वर से भी है महान
इनके बिना तुम कुछ कर नही पाते यदि तुम्हें ये जन्म नही देते
जिसे मिला माता – पिता का आशीर्वाद जग में बना है वो महान
माता – पिता की सेवा करो ये है पुण्य का काम

जिसने तुम्हें लोरी सुनाया खुद जगकर रात भर तुम्हें सुलाया
थके – मारे जब वो काम से आते गले लगाकर तुम्हें सहलाते
जिसे मिला माता – पिता का प्यार जग में बना है वो महान
माता – पिता की सेवा करो ये है पुण्य का काम

जिनके आशीष से तुम पढे-लिखे जिसने तुम्हें पहचान दिलाया
तुम्हारी कामयाबी के लिए न जाने इन्होंने कितना कष्ट उठाया
जिसे मिला माता – पिता का आशीष जग में बना है वो महान
माता – पिता की सेवा करो ये है पुण्य का काम

माता-पिता का कहना मानो उनका न कभी करो अपमान
उनके बुढ़ापे का सहारा बनो सदा करो उनका सम्मान
उनके चरणों में ही है चारों धाम
माता – पिता की सेवा करो ये है पुण्य का काम

मैं आशिक हूँ

मैं आशिक हूँ चाँद का लोग मुझे चकौर कहते हैं
सारी दुनियाँ में मशहूर है जिनकी मोहब्बत की दास्तां
उस लैला का मैं मजनू हूँ

मैं दीवाना हूँ, यमुना किनारे प्रेम की बाँसुरी बजाता हूँ
यूं तो फिदा हैं मुझपे लाखों गोपियाँ मगर मैं सिर्फ राधा को चाहता हूँ

प्यास बुझाता हूँ प्रेम की राही का मैं मोहब्बत भरा समन्दर हूँ
मेरे तन – मन, आत्मा, रूह सब में मोहब्बत भरा है
और मैं मोहब्बत के अंदर हूँ

काश मेरा भी यार होता

काश मेरा भी यार होता
जो बहुत प्यार करता मुझ से
मगर कभी न जताता
उसके बिना मुझे नींद नहीं आती
मेरे बिना वो सो नही पाता
काश मेरा भी यार होता

मेरे बिना वो बेचैन रहता
उसके बिना मुझे चैन नही आता
अगर मैं भूखा रहता
तो वो भी खा नही पाता
काश मेरा भी यार होता

हर वक्त झगड़ता मुझसे
हर वक्त ताना देता मुझे
छोटी सी बात पर रूठ जाता बेसक
मगर मनाने पर वो मान जाता
काश मेरा भी यार होता

काश मेरा भी यार होता
अगर मुझे देर हो जाता तो
वो बैठ कर मेरा इंतजार करता

मेरा बिना वो जा नही पाता
उसके बिना मैं रुक नहीं पाता

पलकों पे रखता , सपनों में आता
यादों के बहाने उसे मैं चाहता
काश मेरा भी यार होता

काश मेरा भी यार होता
वो मेरा शाम होता मैं उसका सवेरा होता
उसके बिना मेरा दिन नही ढलता
मेरे बिना उसका रात नही होता

मेरा मन का मीत होता मेरा सिवा उसे कुछ न भाता
मैं उसके अरमानों में होता वो मेरे ख्वाबों में होता
काश मेरा भी यार होता

काश मेरा भी यार होता दूर रहता मगर दिल के पास होता
मेरा बिना वो मर नहीं पाता उसके बिना मैं जी नही पाता
सुख – दुख में खुशी हो या गम हमेशा मेरे साथ होता
वो फूल होता मैं माला होता
वो मोती होता मैं धागा होता
वो कृष्ण होता तो मैं सुदामा होता
ऐसा दोस्त हमारा होता
काश मेरा भी यार होता

पर्यावरण बचाओ

आस – पास के वातावरण है हमारा पर्यावरण
इसकी रक्षा करना है हमारा धर्म
इससे हम है ये है हमारा अंगरक्षक
ये है हमारा जीवन ऊर्जा इसे बचाना हमारा काम

यदि तुम पर्यावरण की देखभाल करोगे हमेशा स्वस्थ रहोगे
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ पर्यावरण का रखो ख्याल
ये है हमारा जीवन ऊर्जा इसे बचाना हमारा काम

पानी, तेल, खनिज, जमीन जिस पर टिका है हमारा जीवन
जरूरत के ही हिसाब से इसका उपयोग करो बेवजह न करो बर्बाद
पर्यावरण है तो हम हैं इसे बचाना हमारा काम

फल, फूल, पत्ती और अनाज पेड़ पौधों का है ये देन
इसे उजाड़ न महल बनाओ पर्यावरण बचाओ सुखी रहोगे
इसे न करो बर्बाद जीने का है ये आधार हमारा इसे बचाना हमारा काम

सुबह – सुबह जब कोयल गाती है
रिमझिम – रिमझिम वर्षा में जब मोर नाचता है
जब बागों में चहकती है तितलियाँ कितना प्यारा लगता है
पर्यावरण है हमारे जीवन का आनंद इसे बचाना हमारा काम

जब कलियाँ खिलती है फूलों की महक बिखरती है
चारों तरफ रंगीला लगता है सारा जग सुहाना लगता है
जब हम खो जाते हैं पीपल की सुहानी छाँव में
हमारा जीवन कितना न्यारा लगता है
पर्यावरण है हमारे खुशियों का आँगन इसे बचाना हमारा काम

यदि तुम नहीं करोगे पर्यावरण की रक्षा
जीवन तुम्हारा कभी न होगा अच्छा
न पीने को पानी रहेगा न खाने को आनाज बचेगा
न पेड़ रहेगी न छायां मिलेगी हर जगह चिलचिलाती धूप रहेगा
मिट जाएगा सारा संसार यदि पर्यावरण के बचाव पर न दिया ध्यान
ये है हमारा जीवन ऊर्जा इसे बचाना हमारा काम

भूख लगेगी तो क्या खाओगे प्यासे में पानी को तरस जाओगे
न फूल लगेगा न कली खिलेगी न कहीं हरियाली होगी
पर्यावरण न बचा तो कुछ भी नहीं बचेगा
हर कोई हर चीज को तरस जाएगा
ये है हमारा जीवन ऊर्जा इसे बचाना हमारा काम

प्रदूषण से पर्यावरण होता है प्रदूषित जिससे घटती है प्रकृति की उमर
सरेआम न कचरा फैलाओ धुआँ – धूल भी कम उड़ाओ
हर काम सावधानी से करो चाहें तुम थोड़ी कष्ट उठाओ
पर्यावरण है जीवन ऊर्जा यही है हमारे जीने का आधार
इसे बचाना हमारा काम

सलामत रहे दोस्ताना हमारा

कभी न झगड़े तू मुझ से कभी न लड़ू मैं तुमसे
तू रूठे मैं मनाऊँ मैं रूठूँ तू मनाए
हमेशा साथ रहे हमारा सलामत रहे दोस्ताना हमारा

जो तेरा है जो मेरा है वो बने हमारा
रिस्ता तेरा मेरा ऐसा हो जो बने अफसाना
हमेशा साथ रहे हमारा सलामत रहे दोस्ताना हमारा

दूर न हो तू मुझ से मैं हमेशा तेरे पास रहूँ
कभी न आए जुदाई के लम्हे हमारा रिश्ता हो इतना गहरा
हमेशा साथ रहे हमारा सलामत रहे दोस्ताना हमारा

ये मौसम ठहर जाए कलियाँ भी खिल जाएं
हमेशा सावन रहे बगीयन में कभी न पतझड़ आए
हमेशा साथ रहे हमारा सलामत रहे दोस्ताना हमारा

हर कहानी में हो नाम हमारा
जहां तू न हो वहाँ वजूद न रहे मेरा
एक दूजे के सदा पास रहे हमेशा साथ रहे हमारा
सलामत रहे दोस्ताना हमारा

चोट तुझे लगे यदि तो दर्द मुझे हो
गलती तुझसे हो जाए तो सजा मुझे मिले

मेरी उम्र तुझे लग जाए हमेशा तू आबाद रहे
हमेशा साथ रहे हमारा सलामत रहे दोस्ताना हमारा

खुशियों भरा हो हर दिन आंखे कभी नम न हो
सबसे प्यारी हो जिंदगानी हमारी
मुस्कानों से भरा रहे झोली हमारा
हमेशा साथ रहे हमारा सलामत रहे दोस्ताना हमारा

रेगिस्तान में भी फूल खिल जाए
बिन मौसम बरसात हो जाए
बर्बादी के फ़साने हमारे करीब से न गुजरे
कामयाबी हमारी कदम चूमें
हमेशा साथ रहे हमारा
सलामत रहे दोस्ताना हमारा

तेरे मंजिल का राही बनू मैं
कदम से कदम मिलाकर मेरे साथ चले तू
रुसवा न हो तू मुझ से ऐसा न मैं गिला करूँ
बने चाहे दुश्मन सारा जमाना
हमेशा साथ रहे हमारा
सलाम रहे दोस्ताना हमारा

ऐसा हो याराना हमारा याद करे सारा जमाना
जीवन मरण में साथ रहे मौत तेरी हो तो लाश मेरी हो
कब्र में भी साथ रहे हमारा सलामत रहे दोस्ताना हमारा

मेरा और उसका रिश्ता

मेरा और उसका रिश्ता
बिल्कुल स्वेत की तरह साफ था
न कोई खरोंच थी न कोई दाग था

जब पहली बार देखा उसे
मिली जब पहली बार नजर
खो गए हम एक – दूजे में
न होस रही न कोई खबर

लोग कहते हैं उसकी सूरत अच्छी नहीं थी
मगर मैं उसके सीरत पे मरता था
वो मुझसे प्यार करती थी
मैं उससे प्यार करता था

वर्षों इंतजार की उसने मेरा
मैं भी उसके लिए तड़पा था
वो मेरे ख्यालों में रहती थी
मैं उसके ख्वाबों में रहता था

अलग हो गए हम एक दूजे से
दर्द सीने में दफन था
हर रिश्ता निभानी थी हमें
न वो बेरहम थी न मैं बेखबर था

जिसके लिए हमने साथ छोड़ा एक दूजे से नाता तोड़ा
उसने ही थमा दिया हमें बदनामी का कटोरा
कैसे करे पेस हम अपनी मोहब्बत की सफाई
न वो गलत थी, न मैं गलत था

हालात का मारा था वक्त से हारा था
रिश्तों के जंजीर में जकड़े थे हम
मिलना हमारे किस्मत में न था
एक – दूजे से जुदा हो गए हम
न वो बेवफा थी न मैं बेवफा था

सिर्फ वक्त ही तो बदला है

सिर्फ वक्त ही तो बदला है मैं वही हूँ...
सूखे पेड़ में कोंपल सा जीवन की उम्मीद

सिर्फ वक्त ही तो बदला है मैं वही हूँ...
अंधेरी रातों में जुगनू सा उजाले की उम्मीद

सिर्फ वक्त ही तो बदला है मैं वही हूँ...
मुरझाई हुई घास का ओस की बूँद सा ताजगी की उम्मीद

सिर्फ वक्त ही तो बदला है मैं वही हूँ...
प्रेम नगरी में एहसास सा मोहब्बत की उम्मीद

स्त्री

सुक्रगुजार हूँ मैं उस खुदा का जिसने तुम्हें बनाया
ऐसा लगता है दुनियाँ की सारी खूबसूरती है तुझमें समाया
रेशम जैसी जुल्फें है जो काली घटा सा लगता है
क्या मासूम मुखड़ा है गुलाब की पंखुड़ी होंठ तेरा
हर किसी पे छाई है तेरे हुस्न के जलवे और ये कोमल जवानी है
मगर इन सारी चीजों को मैंने बेकार ही मानी है

क्योंकी एक दिन तेरी जवानी ढल जायेगी
उतड़ जाएगा रूप तेरा दुनियाँ के सामने तुम फीकी लगोगी
फिर मैं क्या करूंगा तारीफ तेरा

अगर तेरे हुस्न को छोड़ तेरे हुनर का मैं करू बयां
तो फिर दुनियाँ में है तू सबसे नायाब
तेरा गुण है जग में न्यारा
फिर तेरी जवानी हो या तेरा बुढ़ापा

अपने हिस्से की रोटी मुझे खिलाया
खुद की नींद लूटा मुझे सुलाया
नौ महीने अपने कोख में रखा
न जाने कितने दर्द और पीड़ा सहा
मगर तूने मुझे दुनियाँ में लाया
हे देवी का रूप तू माँ कहलाया

बात – बात पर झगड़ी मुझसे बात – बात पर बिगड़ी तू
कभी खुद रोई कभी मुझे सताया मगर भैयादूज के दिन
माथे पर तिलक लगाकर लंबी उम्र का दुआ फरमाया
तू मेरी प्यारी बहना कहलाई

बाप – भाई का लाज बचाई
माता – पिता की सेवा की
जाकर सासुर सास – ससुर की
ईश्वर की तरह पूजा की
धन्य है तू बेटी बनकर
हर घर में खुशियां दी

सुख दुख में मेरा साथ दिया
चली कदम से कदम मिलाकर
जीवन साथी का मतलब समझाई
जब तू किसी की धर्मपत्नी कहलाई

तू तो है गुणों की गंगा
मैं तेरा क्या गुणगान करूँ
एक ही रूप में सारा रिश्ता निभा दिया
हे ईश्वर तूने क्या स्त्री बनाया

हम बालक हैं नए युग के

हम बालक हैं नए युग के
हमारा जन्म हुआ है नए युग में
नई उमंग है और मजबूत हौसले
बदलना है इस नए युग को

हम बालक हैं नए युग के
हमें कुछ नया करना है
बीत गया जो उसे नही कोसना है
हिम्मत को बांधकर साहस को साथ कर
आज को बदलना है

हम बालक है नए युग के
इरादों में है इतना जान
नही चलना है हमें गैरों के राह पे
खुद नए रास्ते बनाने है
अपने राह पे चल कर
हमें मंजिल को पाना है

रास्ते में आए लाख रुकावट कभी नही डगमगाना है
कहीं लगे ठोकर यदि फिर भी नही घबराना है
अपने बढ़ते कदम को बढ़ाते ही जाना है
अपने मेंहनत के बल पर कुछ बनकर दिखाना है

हमारा ये दृढ़ संकल्प है
हमें अपने काविलियत को दिखाना है
अपने अंदर की शक्ति को बस एक बार जगाना है
करना परे चाहें जो कुछ भी
एक नया इतिहास रचाना है

राज है बहुत छुपे

राज है बहुत छुपे
नम आँखें और
होंठों की खामोशी में
महफिलों की मस्ती
और चेहरों की उदासी में

राज है बहुत छुपे
नभ के काले बादल
और बारिस की रिमझीम बूंदों में
चमकती दामिनी और दहाड़ते बादल में

राज है बहुत छुपे
बागों की बस्ती में
कुछ कली खिली-खिली है
कुछ पुष्प मुरझाए हैं
क्यों गुम है भ्रमर आज
किससे उसकी नाराजगी है

राज है बहुत छुपे
समंदर के शांत लहरों
और किनारों में

क्यों मुकम्मल नहीं हो पाता है
हर दरिया का साहिल से मिलन
क्यों पड़ जाता है
नाविक के माथे पर शिकन

राज है बहुत छुपे
जीवन और जीवन की पहेली में
रिश्तों के बंधन और रिश्तों के एहसासों में
खुदा के रहमत और इंसानों के मन्नत में

जीवन है एक यात्रा

जीवन है एक यात्रा राहों में है बड़ा फासला
चलते चलो बढ़ते चलो जीवन-यात्रा पूरी करते चलो

कहीं धूप तो कहीं छाँव है रेगिस्तानों में भी गाँव है
कहीं ओस की आस तो कहीं जमीनों में दरार है
चलते चलो बढ़ते चलो जीवन-यात्रा पूरी करते चलो

सर पे बोझा बाँधें रो रहा है कोई
कोई खाली हाथ निराश है
किसी के सर पे आलीशान महल है
कोई सड़क पे भटकता बे-लिबास है
चलते चलो बढ़ते चलो जीवन-यात्रा पूरी करते चलो

इस सफर में कोई अपना नहीं है
रिश्तों के मोह में फंसना नहीं है
हर किसी से मिलते-जुलते रहो
चलते चलो बढ़ते चलो
जीवन-यात्रा पूरी करते चलो

जीवन है एक यात्रा राहों में है बड़ा फासला
लेना भी यहीं से है देना भी यहीं है
फिर क्यों बाँधें हम कोई गठरा
चलते चलो बढ़ते चलो जीवन-यात्रा पूरी करते चलो

जब से मैं प्रदेश आया हूँ

ये अजनबी शहर है अजनबी है सब लोग यहाँ
किसी को किसी का भी पहचान नहीं ढो रहे हैं सब बोझ यहाँ
भीड़ बहुत है, अनसुनी गलियों में भटक गया हूँ
जब से मैं प्रदेश आया हूँ

निकले है घर से सभी खुशी की तलाश में
छूट गई है सुकून की नींद गाँव में
अनकही किस्सा है ना समझ पहेलियाँ हैं
यहाँ के रंग – ढंग समझ नहीं पाया हूँ
जब से मैं प्रदेश आया हूँ

हजारों गाड़ियां दौड़ रही हैं सड़क पे चलना भी दुश्वार है
हवाएं धुआँ-धुआँ सा हो गया है साँस लेना भी बेकार है
बीच सफर में आकर यहाँ अटक गया हूँ
जब से मैं प्रदेश आया हूँ

जो रोटी कुत्ते को देते थे वो भी खाना पड़ता है
सुबह – शाम चूल्हे पर हाथ जलाना पड़ता है
कभी भूखे कभी आधी पेट ही सोना पड़ता है
इन सभी चीजों से सहम गया हूँ
जब से मैं प्रदेश आया हूँ

माँ का आँचल छूट गया छूट गया बहन का प्यार
फसलों की खुशबू छूटी और छूट गयी पीपल की छाँव
अपनों के खातिर यहां तड़प गया हूँ
जब से मैं प्रदेश आया हूँ

दोस्तों से यारी जुदा हुई खेत-खलिहान का आनंद लूट गया
यहाँ नहाने के लिए लाइन लगाना पड़ता है
नदियों का वो मनमग्न स्नान छूट गया
जब से मैं प्रदेश आया हूँ

बस काम - काम से मतलब है
जिंदगी में नहीं है कोई हर्ष-उल्लास
सिर्फ भागदौड़ बनकर रह गई है जिंदगी यहाँ
जब से मैं प्रदेश आया हूँ

एक दिन

मैं भी उड़ जाऊंगा आसमां में एक दिन
मैं भी खिल जाऊंगा बागों में एक दिन
इतना हुनर है मुझ में की सारा खेल दिखा दूँ
मैं भी बन जाऊंगा सबसे बड़ा खिलाड़ी एक दिन

मैं भी पार कर जाऊंगा दरियाँ को एक दिन
मैं भी महकाऊँगा गुलिस्तान को एक दिन
इतना हुनर है मुझमे की सारा रास रचा दूं
मैं भी कहलाऊँगा महानायक एक दिन

है सूखी समंदर तो क्या, ओसों से प्यास बुझा लूं
रेगिस्तानों में भी फूलों को खिला दूँ
ऐ खुदा तेरा हाथ रहे मेरे सर पे जन्नत को मैं पा लूं
मैं भी जगमगाऊँगा अम्बर में एक दिन

सीपी से मोती निकले तो हीरा बन जाता है
दिल में बजे संगीत तो किंचित मन भी गाता है
इतना हुनर है मुझ में की सारा सुर सजा दूं
मैं भी धुन बन जाऊंगा वीना का एक दिन

मेरे खुदा

कर दे चमत्कार या कर कोई कमाल
मेरी बिगड़ी बना दे बुरा है मेरा हाल
तुझे करता हूँ मैं तो सत सत नमन
मेरे खुदा पूरी कर दे तू मेरा हर अरमान

कैसे तुझको सुनाऊँ मैं अपने दिल की बात
कोई नहीं दे रहा है मेरा अब साथ
अब तेरा ही सहारा है ये मालिक मेरे
झोली खाली मेरी कर दे रहम की बरसात

तूने ये दुनियाँ बनाया है तुझसे हीं मेरा वास्ता
बीच सफर में फँसा हूँ मैं दिखा कोई रास्ता
मेरी बिनती तू सुन ले ये मेरे खुदा
संकट में हूँ मैं ना जाने कब से घिरा

कदम लड़खड़ा रहा है बिरानी है डगर
मंजिल को कर लूँ हासिल साथ दे तू अगर
मोह माया में फँस गया हूँ मुझको तू मुक्ति दे
छीन रहा है बल मेरा मुझको तू शक्ति दे

दर्द भरा है इस जीवन में

भटक रहें हैं लोग यहाँ, राहें पत्थरिली है
एहसास सारा मर गया और लोगों में दूरी है
गम को पीड़ो रहे हैं मोतियों की तरह
मौत भी आती नहीं और जीना भी मजबूरी है

ना किसी को फिक्र किसी का न करता कोई किसी से सच्चा प्यार
मतलब से भरा ये दुनियाँ है और फीका है ये सारा संसार
दर्द भरा है इस जीवन में गम की है बौछार
सुकून अब मिलता नहीं मुस्कुराना है दुश्वार

ए-जिंदगी

तेरी पल - पल की कहानी मेरे लिए एक पहेली है
फिर क्यों पूछता है तू इतना सवाल मुझे
जालिम हो गई है दुनियाँ और जीना है जंजाल
ए-जिंदगी क्यों करता है फिर तू भी इतना परेशान मुझे

दर-दर की ठोकड़े खाया हूँ तेरे दर पे आया हूँ
तू हीं दे, दे अब कोई सहारा मुझे
चल अब गुजरते लम्हों के साथ गुजर जातें हैं
ए –जिंदगी तुझे अलविदा कहता हूँ
अब मौत दे रही है आवाज मुझे

उम्मीद ए जिंदगी

उम्मीद ए जिंदगी मर के भी जी रहा हूँ
बहते आंसुओं को मैं होंठों से पी रहा हूँ
कहीं कोई कमी न रह जाए उनके खितमत में
लहू का जाम देकर उन्हें टूटे सपनों को मैं सी रहा हूँ

मेरे जैसा दिवाना

जाओ , ढूंढ लो मेरे जैसा दिवाना
जिसके लिए जीवन भी तुम
जिसके लिए मरण भी तुम
जिसके लिए इबादत भी तुम
जिसके लिए ईश्वर भी तुम

जाओ , ढूंढ लो मेरे जैसा दिवाना
जो तेरी चाहत में ताने सुने और पत्थड़ खाए
जो तेरी चाहत में हद से गुजर जाए
जो तेरी चाहत में दुनिया मिटा दे
जो तेरी चाहत में खुद मिट जाए

जाओ , ढूंढ लो मेरे जैसा दिवाना
जिसे प्यार हो तेरी आत्मा से जिसे प्यार हो तेरी रूह से
जिसे प्यार हो तेरी काजल से जिसे प्यार हो तेरी आँखों से
जिसे प्यार हो तेरी अंगड़ाई से जिसे प्यार हो तेरी परछाई से

जाओ , ढूंढ लो मेरे जैसा दिवाना
जिसने तेरे लिए सब कुछ खो दिया
जिसने तेरे लिए दुनियाँ से नाता तोड़ दिया
जिसने तेरे लिए तन्हाई में रो लिया
जिसने तेरे लिए मर के भी जी लिया

ये जिंदगी है

ना जाने जिंदगी के कितने पासे हैं
कुछ उल्टे - पुल्टे कुछ सीधे - साधे हैं
जो उलझ गया उलट-पुलट पासों के झमेल में
वो उलझ गया जिंदगी के प्यार भरे खेल में
जो गया समझ इन पासों के झमेल को
उसने सुलझा लिया जिंदगी के उलझी हुई खेल को

कुछ धुन है मीठी यादों के कुछ स्वर बने गम के नीर से
जो डूब गया गम के नीर में वो जकड़ गया जिंदगी के जंजीर में
जो पीड़ोया मीठी यादों को गीत और संगीत में
उसे मिल गया सुकून जिंदगी के प्यारे प्रीत में

ये जिंदगी है प्रिय बहुत कुछ सिखाती है
कभी हँसाती है तो कभी ये रुलाती है
जो रोया जिंदगी के ताना - बाना से
वो मिल सका न खुशी भरे जिंदगी के खजाने से
और जो मुस्कुराया जिंदगी के कठिन हालातों में
वो जंग जीत गया जिंदगी के मुश्किल जमाने से

कभी खुशी कभी गम

कभी गिरना तो कभी संभलना
और कभी दौड़ना तो कभी ठहरना
बदलते रहता है जिंदगी का हर एक पल
जिंदगी की यही दस्तूर है कभी खुशी कभी गम

कभी महफिलों का मौज तो कभी उदासी भरे तन्हाई है
कभी होंठों पे मुस्कान तो कभी होंठों पे खामोशी छाई है
बदलते रहता है जिंदगी का हर एक पल
जिंदगी की यही दस्तूर है कभी खुशी कभी गम

ना जाने कितने मुश्किलों से लड़ते हैं हम
जिंदगी के सफर में कभी फूलों से सजी
तो कभी पत्थरिली राहों पे चलते हैं हम
बदलते रहता है जिंदगी का हर एक पल
जिंदगी की यही दस्तूर है कभी खुशी कभी गम

कुछ लोग वफदार हैं तो कुछ लोग बिल्कुल गद्दार है
यहाँ पे हर कोई बेवफ़ा नहीं मगर
हर किसी से वफ़ा की उम्मीद नहीं करते हैं हम
बदलते रहता है जिंदगी का हर एक पल
जिंदगी की यही दस्तूर है कभी खुशी कभी गम

हर मौसम सुहाना नहीं है कभी सावन
तो कभी पतझड़ का जवाना है
कभी टूटा है भरोसे का बंधन
तो कभी सभी पे विश्वाश करते हैं हम
बदलते रहता है जिंदगी का हर एक पल
जिंदगी की यही दस्तूर है कभी खुशी कभी गम

खुद पर रख तू भरोसा

खुद पर रख तू भरोसा कर ले इतना यकीन
टूट न खुद से बढ़ने दो अपने कदम को
सफर सुहाना भी होगा रास्ता भी कटेगा तेरा
मंजिल भी मिलेगी तुझे

खुद पर रख तू भरोसा कर ले इतना यकीन
घबरा न अँधेरों से उजाला भी मिलेगा तुझे
मजबूत कर ले अपने इरादे धैर्य के साथ बढ़ तू आगे
सपना तेरा पूरा होगा मंजिल भी मिलेगी तुझे

खुद पर रख तू भरोसा कर ले इतना यकीन
ठोकड़े लगने पर घबरा न गिर कर एक बार और उठ तू
चलते – चलते दौड़ना सीख मुड़कर न देख पीछे
तेरे अरमानों की नगरी पूरी होगी मंजिल भी मिलेगी तुझे

खुद पर रख तू भरोसा कर ले इतना यकीन
डर न गम से पी ले हर दर्द को
अपने विश्वाश को रख तू कायम
मंजिल भी मिलेगी तुझे

खुद पर रख तू भरोसा कर ले इतना यकीन
बदल न तू अपने इरादे चाहें हो लाख रुकावटे

नसीब से नही मिलता है कुछ भी
कसरत से बदलती है किस्मत
कर तू कड़ी मेहनत पूर्ण लगन से बढ़ तू आगे
मंजिल भी मिलेगी तुझे

पहला-पहला प्यार था

वो पहली नजर का प्यार था
जो पहली बार हुआ था
वो पहली मुलाकात थी
वो पहला – पहला प्यार था

बिना कुछ बोले बिना कुछ कहे
बस नैनों ही नैनों में इकरार हुआ था
वो पहली बरसात थी
वो पहला – पहला प्यार था

हवाएं महकने लगी थी सावन में बहार था
मिलों दूर तय हो चुका था उसके साथ चलते – चलते
फिर भी कुछ दूर और चलने को मेरा कदम बेकरार था
वो नई सड़क थी वो नया हालात था
वो पहला – पहला प्यार था

किसी का इंतजार करना किसी के लिए बेकरार होना
रातों में जगना ,नींद न आना
किसी के यादों में खोए रहना दिल में बेचैनी होना
ये तजुर्बा नया – नया था
वो पहली मुलाकात थी
वो पहला – पहला प्यार था

मौसम सुहाना आया था
प्यार का उमंग लाया था
फूल चमन में नही दिल में खिला था
वो पहली मुलाकात थी
वो पहला – पहला प्यार था

मिलते थे दुनियाँ से छुप छुप कर गली के अँधियारों में
वो मेरी बाहों में होती मैं उसके पनाहों में
जब दिसम्बर की सर्द रातों में उसकी कपकपाती हुई होठों को
अपनी नरम साँसों से गरमाया था
और उसके बुखार का असर मुझ पर हो गया था
वो पहली मुलाकात थी वो पहला – पहला प्यार था

खुदा ने कुछ पल का साथ तो दिया
मगर जीवन भर का मिलन नही
कुछ अरसे बाद बिछड़ गए हम
मगर उसके साथ बीते वो दिन
सात जन्मों से क्या कम था
वो मेरी राधा थी मैं उसका श्याम था
वो पहली मुलाकात थी
वो पहला – पहला प्यार था

मेरी माँ

मेरी माँ

आज सब कुछ बदलने वाला है
मेरी माँ का जो मुझपे साया है
अपनी बीमारी का इलाज करते हुए हार गया
लेकिन अब मैं ठीक हूँ
मेरी माँ की दुआ ने असर दिखाया है

सभी दवा से बेहतर था मेरी माँ की दुआ
माँ का प्यार सबसे अच्छा मरहम है
माँ ने जब सर पे हाथ रखा तो
मेरी तबीयत ठीक हो गई
माँ की दी हुई ताबीज में सबसे ज्यादा दम है

खुशियों को ढूँढता रहा मैं दुनियाँ के बाजार में
लेकिन दुनियाँ भर का सुकून मिला
मुझे माँ के ही प्यार में
माँ डॉक्टर और देवी से भी बढ़कर होती है
क्योंकी वो हर दर्द का मर्ज जानती है
चाहें वो उदासी हो खामोशी हो
जिंदगी की चाहें कितनी भी बड़ी परेशानी हो
माँ हर मुश्किल का हल जानती है
माँ तो माँ होती है उदास चेहरे
और बंद होंठों को हँसाना जानती है

चार चाँद लगे हैं

तेरी ऊँची उड़ान को देख कर
थोड़ा सा सहम गया हूँ मैं
की मुश्किल न हो जाए पाना तुम्हें
तुम पहुँच जाओ आसमां पे
और मैं कहीं ढूँढता
न रह जाऊं जमीं पे ही तुम्हें

चारों ओर हो रहें है तेरे चर्चे
लोकप्रिय हो सारे जहां में तुम
मैं तो गुम हूँ गलियों में भी
और आसमां के चमकते सितारे हो तुम

तुमने तो पा लिया है दौलत और सौहरत
न जाने कितना सम्मान मिला है तुम्हें
मुझे तो न कोई अभी जानता है न पहचानता है
मगर सब लोग करते हैं तारीफ तुम्हें

चार चाँद लगे हैं तेरे जीवन में
गगन में जगमगा रही हो तुम
तेरी मीठी स्वर के सब कायल हैं
इतना मीठा गीत गा रही हो तुम

रौशन करो रातों को तुम
जुगनू बनकर मैं भी आऊँगा
बेसक अभी मजबूर हूँ लेकिन
एक दिन मशहूर होकर मैं भी दिखाऊँगा

क्यों गुमसुम है वादियाँ

क्यों गुमसुम है वादियाँ क्यों तन्हा बहारें है
खिली कली मुरझाई है क्यों बागों में उदासी है
क्यों उड़ रहे हैं धूल यहाँ, क्यों बंजर है जमीं
क्यों रूठा है बरखा, क्या इसकी गुस्ताखी है

ना फूल यहाँ है हरे-भरे ना यहाँ हरियाली है
न तितलियाँ चहक रही न कोई माली है
ना यहाँ भौरों का है कोई खोज खबर
पता नहीं क्यों ये गुलिस्ताँ पूरा खाली है

सुलभ नहीं राह यहाँ, और काँटों भरा शहर है
इससे रूठा सावन और आसमां का कहर है
धीरे - धीरे निगल रहा है सुकून का ये सब्र
शौक से लोग खाते हैं कितना मीठा जहर है

इसके तन पर वस्त्र नहीं है और ये वस्त्रहीन है
खुशियों के उलझन में लोग बहुत गमगीन है
कभी भूखे कभी प्यासे कभी तन्हाई में है सब
अपनी जिंदगी फीकी लगती बाकी सब रंगीन है

पता नहीं

मैं तो हमेशा उन्ही के नामों का माला जपती रहती हूँ
मगर उनका मुझे पता नही की वो मेरी फिक्र भी करते हैं
मैं तो उन्हे सिद्दत से चाहती हूँ
पता नही वो मुझसे प्यार करते भी हैं या नहीं

यूं तो मेरे भी आशिक बहुत है
मगर मैं सिर्फ उन्ही की दीवानी हूँ
मैंने तो ठुकरा दिया है दुनियाँ को उनके लिए
पता नही वो मुझे अपनाएंगे भी या नहीं

थोड़ा – सा मासूम है वो, थोड़ा – सा अलबेला है
थोड़ा – सा सीधा है वो, थोड़ा – सा छैलछबेला है
उनके हर फैशन की कायल हूँ मैं
पता नही मेरी सादगी भी उन्हे अच्छी लगती है या नही

मेरी आँखों में तो उन्ही की तस्वीर है
और उनका तस्वीर ही मेरा आयना है
मैं तो हमेशा उन्ही की इंतजार में रहती हूँ
पता नही वो आयेंगे भी या नही

खुदा से दुआ करती हूँ उनकी सलामती का
उनके सारे, दुख – दर्द मेरे हो जाए
वो सदा खुश रहे, मैं यही चाहती हूँ
पता नही वो मेरे लिए इबादत करते भी हैं या नही

मेरे सपने मेरे मंजिल

मेरे सपने मेरे मंजिल
कभी हंसाता तो कभी रुलाता है
मुझे अपने करीब लाने के लिए
रात - रात भर जगाता है

रात भर जगता हूँ सुबह सोने को जी चाहता है
थक हार कर कभी रोने को जी चाहता है
मगर मेरे खुशी के खातिर मेरे सपने मेरे मंजिल
मुझे बार – बार बुलाता है

कभी गुमराह हो जाता हूँ
कभी रास्ता खो जाता हूँ
पगडंडियों पे चलते चलते
कभी – कभी लड़खड़ाता हूँ
मगर मेरा भविष्य बनाने के लिए
मेरे सपने मेरे मंजिल
मुझे बार – बार बुलाता है

आशाओं को साथ लिए
अरमानों का प्यास लिए
मैं भी कदम बढ़ाता हूँ
जब दुनियाँ के ठोकर खाकर

लौट जाने को जी चाहता है
तब मेरे सपने मेरे मंजिल
एक नया उम्मीद जगाता है
मेरे सपने मेरे मंजिल
मुझे बार – बार बुलाता है

जरूरी है

गिरना भी जरूरी है संभलना भी जरूरी है
चलना भी जरूरी है ठहरना भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
हँसना भी जरूरी है रोना भी जरूरी है

पाना भी जरूरी है खोना भी जरूरी है
भटकना भी जरूरी है तलाशना भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
दौलत भी जरूरी है सौहरत भी जरूरी है

दया भी जरूरी है दुआ भी जरूरी है
ईमानदारी भी जरूरी है बेमानी भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
जख्म भी जरूरी है मरहम भी जरूरी है

प्यासा भी जरूरी है पानी भी जरूरी है
भूखा भी जरूरी है भोजन भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
धरती भी जरूरी है अम्बर भी जरूरी है

रूठना भी जरूरी है मनाना भी जरूरी है
अपना भी जरूरी है अजनबी भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
साथ भी जरूरी है साथी भी जरूरी है

सोना भी जरूरी है जगना भी जरूरी है
मेहनत भी जरूरी है कसरत भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
किस्सा भी जरूरी है कहानी भी जरूरी है

सीखना भी जरूरी है सिखाना भी जरूरी है
गुरु भी जरूरी है शिष्य भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
पाठ भी जरूरी है पाठशाला भी जरूरी है

दोस्त भी जरूरी है दुश्मन भी जरूरी है
मोहब्बत भी जरूरी है नफरत भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
यादें भी जरूरी है एहसास भी जरूरी है

सफलता भी जरूरी है असफलता भी जरूरी है
बर्बादी भी जरूरी है कामयाबी भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
ईर्ष्या भी जरूरी है संघर्ष भी जरूरी है

मिलना भी जरूरी है बिछड़ना भी जरूरी है
विश्वश भी जरूरी है विश्वाशघात भी जरूरी है
जीवन के इस खूबसूरत सफर में
जीना भी जरूरी है और मरना भी जरूरी है

कुछ सोचो

कलम तो पकड़ो हाथ में खुद ही कलम चलती नही
क्यों घबराते हो आगे बढ़ने से रास्ता तो तय करो
मंजिल यूं ही मिलती नही

कुछ सोचो तो सही बिना सोचे क्या करोगे
कुछ तो होगा जो तुम्हें बेहद पसंद हो
अपनी मंजिल तुम उसे ही क्यों चुनते नही

दुनियाँ के हिसाब से अपना फैसला क्यों बदलते हो
किस चीज की कमी है तुम में, जो इतना डरते हो
अपने सपने खुद सजाओ और हर चाहत को पूरा कर जाओ

जो करना है आज ही क्यों नहीं करते
बेवजह कल पे क्यों टालते हो
शुरुआत अभी करोगे तो सफलता जल्द ही मिलेगी
याद रखो गुजरा हुआ वक्त लौटता नहीं

तैयार हो जाओ पूर्ण ऊर्जा के साथ
तुम्हारी मंजिल तुम्हें पुकार रही है
सिद्दत से चाहो तो हर चीज मिलती है
बिना मेहनत के कुछ मिलता नही....

सिर्फ तुम

दूर – दूर तक कोई नहीं
कोई करीब कोई नजदीक नहीं
मेरे हर प्यास मेरे हर एहसास में
सिर्फ तुम...

मेरे ख्वाबों में मेरे ख्यालों में
मेरे सपने मेरे अरमानों में
हर किस्से मेरी हर कहानी में
सिर्फ तुम...

मेरे आस में मेरे सांस में
मेरे दिल में मेरी धड़कन में
हाथों की लकीर मेरी तकदीर में
सिर्फ तुम...

हर जगह तुम्हें ढूंढती है मेरी निगाहें
भीड़ में तन्हाई में खुशी में गम में
महफ़िल में उदासी में
सिर्फ तुम...

कोई नहीं है मेरा अपना तेरे सिवा न कोई सपना
गीत में संगीत में मीत में प्रीत में

दुनियाँ की हर रीत में

सिर्फ तुम...

तेरी चाहत है मेरी जिंदगी

जिंदगी मेरा तेरे लिए

मेरी जिस्म की जान हो

मेरे सपनों की उड़ान हो

प्यार में रुसवाई में सिर्फ तुम...

मेरी चाहत की जुवान

मेरे इश्क का फरमान

मेरा पहला प्यार

मेरी आखरी मोहब्बत

सिर्फ तुम...

अपने हो गए पराये

आया हूँ कुछ कहने कुछ सुनाने के लिए
अपने दिल का हाल सबको बताने के लिए
दुनियाँ में कोई अपना नहीं सारे रिश्ते झूठे हैं
आया हूँ दुनियाँ को सच्चाई का आईना दिखाने के लिए

ना थी मेरी कोई गलती ना मेरा था कुसूर
मगर अपने हक के खातिर मैं बोला था जरूर
भूल इतनी हुई की हर किसी पे भरोसा किया
और बदले में सबने मुझे धोखा दिया

अपने हो गए पराये पल भर में बिखर गया सारे रिश्ते और नाते
कोई भी नहीं सुना मेरे मन की एक भी बातें
परिवार की बस्ती से एक दुलारा को निकाल दिया
जो सबके आँखों का तारा था उसको सबने जिंदा ही मार दिया

अब जाऊं मैं कहाँ कोई बता दे मुझे
अपने प्यार की कुटियाँ में कोई पनाह दे मुझे
मैं पूरी तरह से लाचार और बेबस हूँ अभी
मरने का मन कर रहा है मेरा
कोई जीने की एक खास वजह दे मुझे

मजबूरीयों के मंजर

मजबूरीयों के मंजर ने कुछ इसकदर लूटा मुझे
की किसी के हम न रहे तो कोई हमारा न रहा
दफन हो गयी सारी ख्वाहिशें रेत में
अरमानों की जमीं बंजर हो गई
और प्यार भरे सारे रिश्ते बैगाने हो गए,
हकीकत की आंधी ने
आँखों से गलतफेमि का ऐसा पर्दा हटाया
की अब जीने की कोई ख्वाहिश ही नहीं रहा...

लौटेंगे हम

एक दिन फिर लौटेंगे हम
रास्ते में आए रुकावट को दूर करेंगे हम
जहां थे वहाँ फिर पहुंचेंगे हम
एक दिन जरूर लौटेंगे हम

दुनियाँ से हारा हूँ खुद से टूटा नही हूँ
जीतने की आस बाकी है अभी पूरी तरह हारा नही हूँ
अपने मंजिल पर जरूर पहुंचेंगे हम
एक दिन जरूर लौटेंगे हम

यूं गिरकर फिर उठेंगे हम
अपनी कमजोरियों को दूर करेंगे हम
अपने ताकत को मजबूत करेंगे हम
एक दिन जरूर लौटेंगे हम

रास्ता खोया हूँ लेकिन अपने मंजिल से भटका नहीं हूँ
एक बार फिर संभलेंगे हम नई उड़ान भरेंगे हम
अपने मंजिल के राह पर चलेंगे हम
एक दिन जरूर लौटेंगे हम

टूटे मोती को फिर से पीड़ो लेंगे हम
बिखरें अरमान को फिर से सजा लेंगे हम
अपने काविलियत को फिर से दिखाएंगे हम
एक दिन जरूर लौटेंगे हम

तेरे बगैर

ये आँगन ये गाँव ये पीपल की छाँव
ये नदियां ये तालाब ये वादियाँ ये घाटियां
सब कुछ सुना है सनम
तेरे बगैर

ये कंगन ये चूड़ी ये बिंदियाँ
ये पायल ये रूप ये शृंगार
सब कुछ फीका सा लगता है सनम
तेरे बगैर

ये यौवन ये जवानी
ये काजल ये जुल्फें
कुछ भी मुझ पर जचता नही है
सब कुछ खामोश है सनम
तेरे बगैर

किसी त्यौहार का मुझे पता नही चलता है
कब आता है और कब चला जाता है
हर रंग रंगहीन लगता है मेरे उपर
अब होली भी फीकी लगती है सनम
तेरे बगैर

तू ही तो सहारा था मेरा तू खुदाया था
तेरे बाद मेरा कुछ भी नहीं उजड़ गया मेरा संसार
किस से मांगू मैं सहारा मेरा कोई ठिकाना न रहा सनम
तेरे बगैर

किसी का मैंने क्या बिगाड़ा था
क्यों जालिम बन गयी दुनियाँ हमारा
हमने क्या गुनाह किया था जो उजाड़ दिया
हमारे मोहब्बत का आसियाना
मेरी बिखड़ी हुई जिंदगी को अब कौन संभालेगा
दर – बदर भटक रही हूँ सनम
तेरे बगैर

अनकही, अनसुनी लगती है हर डगर
जिसमें कभी साथ गुजरे थे हमसफर
हर गली , हर शहर हर ठिकाना पूछता है तेरा हाल
हर राह खामोश है सनम तेरे बगैर

उजली चादर में लिपटा है ये मेरा मासूम वदन
बस साँसे चल रही है मर तो मैं कब की गई हूँ
मेरा दिल नहीं चाहता है धड़कना तेरे बिना
जिंदा लाश बन गई हूँ सनम तेरे बगैर

मैं कितना नादान था

कोई मुझे कुछ भी कह देता था
कभी डांटता कभी फटकारता था
पर हर किसी का जुर्म मैं चुपचाप सह जाता
और किसी से कुछ कह नहीं पाता था
मैं कितना नादान था

खुद भूखा रह कर दूसरों को खिलाता था
अपने हिस्से का पानी प्यासों को पिलाता था
हर किसी का काम कर देता था
हर दर्द को चुपचाप सह जाता
पर किसी से कुछ कह नहीं पाता था
मैं कितना नादान था

किसी को भी मेरी फिक्र नहीं
हर कोई मुझे ठुकड़ा देता था
काम होने पर प्यार से बात करता
और बिना काम के अपने
पास भी नहीं बैठने देता था
हर कष्ट को चुपचाप सह जाता
पर किसी से कुछ कह नहीं पाता था
मैं कितना नादान था

अपनों के लिए समय नहीं रहता था
दूसरों के लिए घंटों बर्बाद कर देता था
अपना सपना छोड़ कर
दूसरों की ख्वाहिश पूरा करता था
हर दुख को चुपचाप सह जाता पर
किसी से कुछ कह नहीं पाता था
मैं कितना नादान था

धूप हो या गर्मी चाहें हो बरसात
हर किसी के लिए कहीं भी चला जाता था
अपनी जान की परवाह किए बिना
दूसरों की जान बचाता था
सभी के सितम को चुपचाप सह जाता
पर किसी से कुछ कह नहीं पाता था
मैं कितना नादान था

थोड़ा मैं जल्दी भावुक हो जाता था
हर किसी से मुझे हमदर्दी हो जाता था
कोई मुझे कितना भी धोखा दे
फिर भी मैं उसपे पूरा भरोसा करता था
सब के गद्दारी को चुपचाप सह जाता
पर किसी से कुछ कह नहीं पाता था
मैं कितना नादान था

एक सितारा टूट गया

एक सितारा टूट गया आज
सूना लग रहा है आसमा
गगन बहुत गमगीन है
जैसे उसका लूट गया पूरा जहां

मधुबन आज उदास है
एक फूल मुरझाने से
बागों में सन्नाटा छाया है
वसंत के चले जाने से

सारी उम्र याद रहेगी ये ऐसी कहानी है
इसे कोई नहीं भूल सकता है
ये ऐसी बलिदानी है

एक सिकायत है खुदा से
क्यों उसने अनमोल मोती को तोड़ दिया
जन्मों-जनम तक पूरी नहीं होगी उसकी कमी
जिस हीरे ने आज दुनियाँ छोड़ दिया

प्रकृति के प्रकोप

हर गाँव हर गली कहीं शहर न बन जाए
ये नदियाँ और तालाब कहीं गटर न बन जाए
इतनी भी तरक्की मत करो दुनियाँ वालों
की ये महकती हवायें कहीं जहर न बन जाए

ये पीने का पानी कहीं तेजाब न बन जाए
इस खाने के भोजन से बीमारी न फैल जाए
क्यों करते हो मिलावट चंद पैसों के खातिर
लालच में कहीं इंसानियत न मीट जाए

भगवान के बनाए चीज को बिगाड़ो मत
इन पंछियों के घोषलों को उजाड़ो मत
जीने का हक है सभी जीव-जन्तुओं का
पेट की आग के खातिर जीवों को मारो मत

ये उपजाऊ जमीं कहीं बंजर न हो जाए
बिन मौसम के बागों में पतझड़ न हो जाए
प्रकृति के साथ खिलवार क्यों करते हो
प्रकृति के प्रकोप से
इंसान कहीं तड़प कर न मर जाए

चाहत है या ख्वाब है

तू चाहत है या ख्वाब है
तू दूर है या पास है
बस तुमसे मिलने की आस है
तू ही मेरी प्यास है

जहां से झरने उतरती है वह झील है तू
बागों में महकती फूल है तू
कोयल की गाती मीठी गीत है
मेरे अरमनो की मीत है तू

तेरे मुस्कान पर सावन आए
बिन मौसम बरसात हो जाए
तेरे आहट से निकले सूरज
रातों में भी दिन हो जाए

तुझे देख चाँद भी सरमाये
गगन में आकर तारे जगमगाए
बहती नदियां रुक सी जाए
मेरे मन को तू हीं भाए

नया साल

सेकेंड, मिनट, दिन, सप्ताह, महीना सब बीत गया और
इस तरह गुजर गया पूरा एक साल
और गुजरे हुए आलम में न जाने कितने कड़ियों से गुजरें हैं हम
कभी उलझना तो कभी सुलझना
कभी हँसना तो कभी रोना कभी खुशी कभी गम
कभी सब के साथ मौज मस्ती तो कभी तन्हाई में रहें हैं हम
बीते सालों में ना जाने हमारे जीवन में कितना उताड़-चढ़ाव आया
कभी सफलता हाथ लगी तो
कभी असफलता का भी सामना किए हैं हम
अब पीछे जो कुछ भी हुआ उस से कुछ सीख
लेते हुए जो चीजे हमारे लिए अच्छा नहीं था
उस सभी बातों को भूलते हुए आगे आने वाला
जो भी पल है और जो ये नया साल आ रहा है
इसमें हम सब मिलकर लेते हैं प्रण की अपनी मजबूरीयों को अवसर बनायेंगे
एक दृढ़ निश्चय से हर मुश्किल का सामना कर पाएंगे
और कोशिश रहेगा की हर लम्हा हर पल खुशी, आनंद, पूरे सुकून से जियेंगे
और अपनी कड़ी मेहनत के बल पर अपनी किस्मत को चमकाएंगे हम

मैं पानी हूँ

कोई मुझे रोके मुझे कोई गम नहीं
मैं पानी हूँ मुझे राह की जरूरत नहीं

झरना से उतड़ कर झील बन जाता हूँ
समंदर से निकलकर नदी कहलाता हूँ
जहां से गुजरता हूँ वहीं राह बन जाता है
कोई मुझे रोके मुझे कोई गम नहीं
मैं पानी हूँ मुझे राह की जरूरत नहीं

बिखेर दो जमीं पर या उछाल दो आसमां में
दफ़ना दो मिट्टी में या उफनती आग में डाल दो
चाहें करो मुझपे कितना भी सितम
मुझे दर्द की कोई परवाह नहीं
कोई मुझे रोके मुझे कोई गम नहीं
मैं पानी हूँ मुझे राह की जरूरत नहीं

प्यासों का प्यास बुझाता हूँ
गंदगी को साफ कर जाता हूँ
तपन को शीतल कर दूँ
हर मौसम में काम आता हूँ
कोई मुझे रोके मुझे कोई गम नहीं
मैं पानी हूँ मुझे राह की जरूरत नहीं

तू मेरी चाँद है

मैं तेरा चकौर
तू मेरी चाँद है
मैं भी दीवाना हूँ तेरा
जैसे राधा का श्याम है

यह मंजर है पतझड़ का
मुझे सावन पर ऐतवार है
मैंने भी चाहा है तुम्हें
जैसे शिरी को चाहा फरहाद है

बरखा जो बरसे कभी तेरे आँगन में
समझ लेना मेरी आँखों से
नीर बहें हैं तेरी यादों में
पल-पल तड़पा है ये दिल तेरे लिए
तू ही मेरी मुमताज है

मेरा भी दिल नही लगता है तेरे बिना
तेरे इश्क में मेरा बुरा हाल है
कैसे बयां करूँ अपने इश्क की दास्तां
मुझे तुमसे कितना प्यार है

मेरा बचपन कितना प्यारा था

कितना सुहाना था वो दिन कितना न्यारा था
सावन के मौसम में रिमझिम - रिमझिम
बारिस में दोस्तों के साथ मजे से नहाता था
मेरा बचपन कितना प्यारा था

छुप-छुप कर धूप में घर से निकल कर
दोस्तों के साथ बगीचे में जाता था
लुपछुप - लुपछुप पेड़ पे चढ़ कर
चोरी करके मीठा फल खाता था
न किसी बात की कोई फिक्र रहती थी
न कोई टेंशन था
मेरा बचपन कितना प्यारा था

पापा जी के डर से स्कूल जाता था
और मास्टर जी को खूब चिढ़ाता था
पापा जी डांटते थे और मम्मी मनाती थी
न चेहरे पे उदासी न कोई गम था
मेरा बचपन कितना प्यारा था

वो गिल्ली-डंडा का खेल वो कबड्डी का मेल
पतंग उड़ाते - उड़ाते शाम हो जाता था
न कोई जिम्मेदारी थी न पैसे कमाने जाना था

वो तो बस मौज - मस्ती का जमाना था
मेरा बचपन कितना प्यारा था

बचपन में मैं कितना सोर - सराबे करता था
मिट्टी - धूल मालूम नहीं पानी से होली खेलता था
शाम को पढ़ते समय सिर्फ रसोई पे ही ध्यान रहता था
मम्मी के हाथों का बना वो पराठा
कितना स्वादिष्ट और प्यारा था
मेरा बचपन कितना प्यारा था

चंदा

मेरी एक बहन है नाम है चंदा
जो मेरे साथ अपना सब कुछ बांटती है
सिर्फ पापा के दिए हुए टॉफी नहीं
या सिर्फ गरमा – गरम कॉफी नहीं
वो मेरे साथ सब कुछ बांटती है
जैसे की –
मेरे हिस्से का दर्द और मेरे हिस्से की तन्हाई
मुझ पर आने वाला हर दुख की हर एक परछाई

मेरी एक बहन है नाम है चंदा
जो हर मुश्किल में मेरा साथ निभाती है
मेरे जख्म पर वो प्यार का मरहम लगाती है
वो मुझे अपने हाथों से खाना खिलाती है
मुझ पर आने वाला संकट से वो पहले लड़ जाती है
वो बहन है लेकिन माँ के जैसे मेरा ख्याल रखती है

मेरी एक बहन है नाम है चंदा
जो मेरे साथ अपना सब कुछ बांटती है
सिर्फ घर में बनने वाला मिठाई नहीं
या सिर्फ बाजार से आने वाला रसमलाई नहीं
वो मेरे साथ सब कुछ बांटती है
जैसे की –

मेरे मुस्कुराहट के पीछे की खामोशी
मेरा सर्दी बुखार और खाँसी
मेरे हिस्से की आँसू और मेरी उदासी
मेरे हिस्से का सारा गम मेरे चेहरे की मायूसी

मेरी एक बहन है जो सबसे अच्छी केयर टेकर है
वो मेरा सब कुछ संभालती है
जैसे की –
वो मेरे सेहत का पूरा ख्याल रखती है मुझे क्या खाना है वो सारा इंतजाम करती है
वो मेरा सारा कपड़ा धो देती है और उसे समय पर इस्त्री कर के अलमिरा में रख देती है
मुझे कब सोना है कब जगना है सब बताती है और समय-समय पर मुझे, मेरा दवाई भी खिलाती है
हम दोनों के बीच हमेशा नोक-झोंक होते रहता है मगर मेरे मुश्किल समय में वो मेरी दोस्त बन जाती है

मेरी एक बहन है नाम है चंदा
जो मेरे लिए दुनियाँ की सबसे अच्छी और प्यारी बहन है...

वह किसान

सूरज के निकलने से पहले
चिड़ियाँ के चहकने से पहले
नींद पूरा हो या अधूरा मगर
बिस्तर छोड़ उठ जाता है
वह किसान

माथे पर लपेट कर गमछा
कंधे पर हल लेकर
धूप की प्रवाह किए बिना
खेतों में काम करता है
वह किसान

बुआई से पहले जुताई करता है
माथे से टप-टप उसके पसीना बहता है
फसल लगने पर सिंचाई करता है
जब तक फसल पकता नहीं तब तक
उसकी रखवाड़ी करता है
वह किसान

अपने घर में धन नहीं रखता
सारा खर्च फसलों पे है करता

खुद भूखे पेट जमीन पे सो जाता है पर
फसलों को खाद - पानी देता है
वह किसान

कड़ी मेहनत से फसल उगाता है
ठंडी - गर्मी सब सह जाता है
प्रकृति के साथ मिलजुलकर
सब के पेट की आग बुझाता है
वह किसान

उसी को गाता हूँ

उसी को गाता हूँ, उसी को गुनगुनाता हूँ
मेरे मन के आँगन में उसी के चाहत का मंजर है
मेरे लफ्जों के दहलीज पर उसी का नाम आता है

न उसे बता पाता हूँ न उससे छुपा पाता हूँ
मन ही मन में उसे मैं बहुत चाहता हूँ
उसके इश्क का खुमार मुझ पर इस कदर छाया है
न उसे जता पाता हूँ न दिल को समझा पाता हूँ

मेरे दिल में उसी का फितूर है
न जाने मोहब्बत का ये कैसा दस्तूर है
उसके करीब जाता हूँ नजदीकियों के वास्ते
मगर दूरियाँ बढ़ा आता हूँ

मैं उसे खोना नही चाहता हूँ
लेकिन उसे अपनाने में हरमोड़ पे आफत है
कहीं रिश्तों का जंजीर जकड़ा हुआ है
तो कहीं भरोसों का बगावत है

मेरी बेवसी को वो मेरी बेवफाई समझती है
मेरी नाराजगी को वो लड़ाई समझती है
प्यार, मोहब्बत के रस्मों – रिवाज

उसे समझ नही आती है
वो इतनी मासूम है की उसके अलावा
और कुछ मुझे नही भाता है

सब सोता है तो सोने दे

सब सोता है तो सोने दे
तू जाग न कुछ खोने दे
आशा न कर रहम की
अपने धुन में तू करम कर
अपनी मंजिल तू तय कर

सब सोता है तो सोने दे
तू जाग न कुछ खोने दे
कर लिया तू आराम बहुत
आगे बढ़ अब न इंतजार कर
अपनी मंजिल तू तय कर

सब सोता है तो सोने दे
तू जाग न कुछ खोने दे
पश्चताप की आग में मत जल
चल उठ एक नई शुरुआत कर
अपनी मंजिल तू तय कर

तोड़ दे मुसीबत की सारी दीवार
चट्टानों का सीना चीर दे
जला कर चिराग अँधेरों को रौशन कर
अपनी मंजिल तू तय कर

सब सोता है तो सोने दे
तू जाग न कुछ खोने दे
जो भी तेरे दुश्मन है
बना ले उसको दोस्त तू
जो है तेरे राह में पत्थड़ों की ढेर
उसे पिघलाकर मोम कर
अपनी मंजिल तू तय कर

वो मुझे प्यार करता है

इस एहसास से वो मुझे इनकार करता है
सामने आने पर भी नैनाचार करता है
मुझे देख कर अपना रुख तक बदल देता है
बात करने से भी इनकार करता है

छुप - छुप कर देखता है वो मुझे
पर सामने आने पर शर्माता है
बड़े भोले है मेरे मोहब्बत का मसीहा
डर लगता है उसे जमाने से

मेरी चाहत का घायल तो वो कब से है
मगर हर दर्द को नजरअंदाज करता है
न जाने कितने बहाने बनाता है
वो मुझ से दूर जाने की
मगर हर बार वो हार जाता है

सोते ,जगते मेरी ही तस्वीर दिखाई देती है उसे
पर याद करने से इनकार करता है
मुझे चाहता है वो खुद से भी ज्यादा
मगर इश्क की बात पर नाराज हो जाता है
पूछने पर कहता है मुझे मोहब्बत नही है तुमसे
मगर इसी अंदाज से वो मुझे प्यार करता है

दीया और बाती

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिया जलाने की बात हुई
हर घर हर शहर हर चौक हर चौराहे पर दीया और बाती साथ हुई

प्रदीप्त ज्वाला के साथ जलने लगे दीया और बाती साथ में
प्रकाश की किरने फैलने लगी अंधेरा दूर होने लगा
छा गया चहुँ ओर उजाला बातों ही बात में
सारे दर्दों - गम भूल गए हम
जब देखा दिया और बाती का मधुर मिलन
खुद जलकर तिरगी को रौशन किया
दीया और बाती के जलने से जगमगा गया सारा चमन

इस तरह दीया और बाती के संगम से
अंधेरा दूर हो गया मेरे आँगन से
तन - मन मेरा ज्योतिमय हुआ
दीया और बाती के पावन से

दीया और बाती साथ में ये बात कही रात में
किसी से तुम बैर न करो सब मिलजुलकर रहो
सुख बांटो खुशियां फैलाओ हर हालात में
खुशी हो या गम जिंदगी जियो सब साथ में

बेबसी के आलम

बेबसी के आलम न पूछो यारों कितना मुश्किल
होता है इन हालातों को संभाल पाना
उफनती आग में भी खड़ा रहना पड़ता है
उसकी तपन को चुपचाप ही सहना पड़ता है
ऐसा नहीं है की इस बेबसी के आलम को
मात नहीं दे सकते हैं फिर भी हम डरते हैं
क्योंकी जब अपनो की जिंदगी दाव पे लगी होती है
तो वो सभी काम करते हैं जो हरगिज नहीं करना चाहते हम...

उड़ान

डूबने के दरमियां मुझे तिनके का सहारा मिला
बह ही चली थी कश्ती की दरियाँ ने पार लगाया
उम्मीद – ए – साहिल तैरता रहा समंदर में
तब जा कर मुझे किनारा मिला

न जाने कितने ठोकड़े खाए हम कितनो ने सताया मुझे
जुर्म करती रही दुनियाँ मुझ पर अपनो ने भी साथ छोड़ दिया
हर किसी से मांगा मदद की भीख मगर हर कोई बैगाना निकला
कैसे बयां करू अपना आलम –ए- दर्द जब हर लम्हा दर्द का साया रहा

हार गया था मैं दुनियाँ से मगर खुद से टूटा नही था
न जाने कितनी बार गिरा आगे बढ़ने के दरमियाँ पर हर बार उठता था
चलते – चलते थक जाता था मगर रुकता नही था
आंधी तो बहुत आये मेरे राहों में मगर हर तूफान को पार किया
हिम्मत के सहारे चलना सीखा धैर्य से किया काम
मंजिल को पाना था मुझे हौषलों से लिया "उड़ान"

सिर्फ तुम्हें पाना है

ये सपना मैंने नया - नया सजाया है
तेरी अदाओं ने मेरे दिल को लुभाया है
तेरा ही जादू मुझ पर छाया है
सिर्फ तुम्हें पाना है ये मेरी हसरत है
अपने ख्वाबों की सहजादी तुम्हें बनाया है

तेरी तस्वीर को सीने से लगाकर सोने लगा हूँ
तेरे ख्यालों में खोने लगा हूँ
तेरे चाहत की कशिश बढ़ने लगी है
तेरी मोहब्बत ने मुझे बेगाना बनाया है
सिर्फ तुम्हें पाना है ये सपना मैंने नया - नया सजाया है

तुमसे मोहब्बत नहीं है मगर
तुम्हारे अलावा किसी और को नही चाहता हूँ
मेरे दिल में बस गई हो मेरी धड़कन बनकर
अपनी साँसों में तुम्हें समाया है
सिर्फ तुम्हें पाना है ये सपना मैंने नया - नया सजाया है

चमकते चाँद के जैसा है मुखरा तेरा
सुरीली स्वर है कोयल जैसी
तेरी सादगी ने मुझे दीवाना बनाया है
सिर्फ तुम्हें पाना है ये सपना मैंने नया - नया सजाया है

धीरे – धीरे तेरे प्यार में बेताबी बढ़ने लगी है
पल – पल हरपल तेरी याद सताने लगी है
तेरे बिना जीना भी दुसवार हो गया है
सिर्फ तुम्हें पाना है ये सपना मैंने नया - नया सजाया है

तुम मानो या न मानो
मगर मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ
नहीं छोडूँगा साथ तेरा ये वादा करता हूँ

तुम मिलो या न मिलो मगर
अपने सपनों की रानी तुम्हें बनाया हूँ
सिर्फ तुम्हें पाना है ये सपना मैंने नया - नया सजाया है

क्या वो भटका मुसाफ़िर है

रोज सवेरे कहाँ से निकलता है सूरज
और शाम को कहाँ छुप जाता है
रात भर चलते-चलते शायद चाँद भी थक जाती है
पता नहीं सुबह तक कहाँ गायब हो जाती है
क्या इसका कोई ठिकाना नहीं है
क्या ये भटके हुए मुसाफ़िर हैं

दिन भर दौड़ लगाती है चिड़ियाँ
इस पहाड़ी से उस पहाड़ी तक
पता नहीं रात में ये कहाँ आराम करती है
हर सुबह यही क्रिया ये हर रोज अपनाती है
क्या इसका कोई ठिकाना नहीं है
क्या ये भटके हुए मुसाफ़िर हैं

गोल - गोल परिक्रमा करती है ग्रह-नक्षत्र
ब्रह्मांड में न जाने कितने आकाश गंगा-तारें हैं
सब निरंतर बिना रुके घूमते रहता है
कहीं नहीं ये रुकती या ठहरती है
क्या इसका कोई ठिकाना नहीं है
क्या ये भटके हुए मुसाफ़िर हैं

कहाँ तक जाना है और क्या पाना है
न रास्ता मालूम है न मंजिल का कोई पता
जिसका कोई ठिकाना नहीं है
क्या वो भटका मुसाफ़िर है

कोरोना - एक बीमारी

क - से - कोरोना ने कहर मचाया है
न जाने ये कितना खरनाक बीमारी आया है
देश – विदेश सबको पूरा परेशान कर दिया है
पूरे भारत में सम्पूर्ण लॉकडाउन लगाया है

क – से – कोरोनो को भगाना है
घर में ही सबको सारा समय बिताना है
साबुन से हाथ को बार - बार धोना है
घर से किसी को बाहर नहीं जाना है

जान बचानी है तो घर में ही रहना होगा
लोगों से दूरी बनाकर मिलना है
क – से – कोरोना को हराना है
कोरोना को मार भगाना है

इस मुश्किल घड़ी में है सबका साथ निभाना
भूखे को भोजन और प्यासे को पानी पिलाना है
क – से – कोरोनो को भगाना है
कोरोना से सबको बचाना है

क – से – कोरोना को हराना है
बाहर जाने का रिस्क नहीं उठाना है

मुहँ में हमेशा मास्क लगा कर रहना है

कोरोना का टीका सबको लगाना है

कोरोना को मार गिराना है

काश मेरा बचपन ठहर जाता

काश ऐसा नहीं होता मैं जवानी में मदहोश नहीं होता
अगर मेरा बचपन नहीं गुजरता तो मैं हमेशा खुश रहता
अब चैन की नींद आती नहीं है लोरी गाकर माँ सुलाती नहीं है
काश मेरा बचपन ठहर जाता मैं हमेशा माँ के हाथों से खाना खाता

परिंदे सोच में हैं

परिंदे सोच में हैं मेरे पंख काटने वाले आज पंखहीन हुए घर में घुट रहे हैं

मैं झूम रहा हूँ जमीं से लेकर आसमां तक इंसान आज अपने ही घर में मर रहें हैं

मुझे जाल में फ़साने वाले आज खुद कोरोना के जाल में फँस गए हैं

खुदा के करामात के आगे आज सारा संसार पानी - पानी को तरस गए हैं

जिगरी दोस्त

वो बचपन के प्यारे – दुलारे मेरे यार थे बड़े निराले
नोक - झोंक, लड़ाई - झगड़े खूब मस्ती करते थे हम सारे
मुश्किल घड़ी में हम एक दूसरे का साथ निभाते थे
विधालय में सोर मचाते, शिक्षकों को खूब चिढ़ाते थे
और एक – दूसरे का टिफिन चुरा कर खा जाते थे
हम साथ में मेला जाते थे और मेले में पूरा धूम मचाते थे
स्वार्थहीन था हमारा याराना मिल-बाँट कर सबकुछ खाते थे
ऐसा था हमारा दोस्ताना जैसे मोती और धागा
जिगरी दोस्त होते हैं जिंदगी के हिस्सा आधा

मिट्टी का चूल्हा

मिट्टी की जलती हुई चूल्हा की तरह शदियों से नारी जली है
कभी सतीप्रथा के कारण तो कभी दहेजप्रथा के कारण
कभी दरिंदों का सिकार हुई तो कभी कोठे पे चढ़ी है
कभी इनके जिस्मों का सौदा सारे बाजार हुआ
तो कभी मर्दों ने इन्हें जुआ में दाव पे लगाया है
दुनियाँ ने युगों-युगों से स्त्रियों को कितना तड़पाया है
सीता ने अग्नि परीक्षा दी और द्रोपदी का चीर हरण हुआ

जिंदगी की सफर शानदार होनी चाहिए

छोटी हो बड़ी शुरुआत होनी चाहिए
मंजिल मिले या ना मिले प्रयास होनी चाहिए

अपना हो या अजनबी प्यार होना चाहिए
रिश्ता जैसा भी हो एहसास होना चाहिए

वैसे तो कोई भी सफर हमेशा सुहाना नहीं होता है
मगर जिंदगी की सफर शानदार होनी चाहिए

लालच या लालसा नहीं है की सब कुछ मिल जाए मुझे
मगर कुछ पाने की प्यास जोड़दार होनी चाहिए

मुस्कुराना भी तो जिंदगी की जरूरत है

क्यों घुट – घुट कर जिये हम जब खुश रहने की हसरत है

क्यों रोये हम बेमतलब की बातों से मुस्कुराना भी तो जिंदगी की जरूरत है

उसको हम अपना दोस्त क्यों बनायें जिसको हमसे नफरत है

क्यों जीना छोड़ दे हम बिखरे अरमानों के खातिर मुस्कुराना भी तो जिंदगी की जरूरत है

मुझे लहरों से टकराना है

जब - जब आंधी आएगी जीवन के संदर में
जब जीवन का तिनका उलझ जाएगा बवंडर में
जब बीच संदर में फँस जाएगी जीवन की कश्ती
तब अंधड़ से लड़कर तट जाना है
तब किनारा पाने के लिए मुझे लहरों से टकराना है

जब उम्मीद सारी टूट जाएगी बचेगा न आस कोई
जब चक्रवात में फँस कर डूबेगी तकदीर मेरी
जब मझधार में अटक कर प्राण नौका डगमगाएगा
तब तूफ़ानों से लड़कर मंजिल को पाना है
तब साहिल के लिए मुझे लहरों से टकराना है

यहाँ सब की दुनियां अलग है

राजनीति में भ्रष्टाचार है संकट में घिरा जनता दरबार है
यहाँ नेता ही लूट रहा है वफादार नहीं सरकार है

अपनी सभ्यता खो रहें हैं पश्चिमी सभ्यता असरदार
आदर भाव भूल गए हैं सब ना सही शिक्षा ना सही संस्कार है

निरक्षर को सब बेकार समझते हैं साक्षर लोग बेरोजगार है
भूखा भिखारी भटक रहा है मजदूर किसान लाचार है

किसी के लिए जिंदगी जंजाल है कोई जिंदगी में खुशहाल है
किसी को गम है कुछ खोने की तो कोई सब कुछ पाकर भी बेहाल है

चाँद पे उड़ान तो भर रहें हैं लेकिन पृथ्वी का विनाश कर रहें हैं
यहाँ सब की दुनियां अलग है कोई अपने लिए लड़ रहें हैं तो कोई मर रहें हैं

अपने तकदीर को आजमाना चाहिए

आँखें नम हो या जिंदगी में कोई गम हो मुस्कुराना चाहिए
महफ़िल हो या तन्हाई गुनगुनाना चाहिए

जख्म गहरा हो तो मरहम जरूर लगाना चाहिए
फ़ीके रिश्तों में प्यार का रंग चढ़ाना चाहिए

हालात कैसा भी हो खुशी से जीवन बिताना चाहिए
मेहनत के बल पर अपने तकदीर को आजमाना चाहिए

जब उलझ जाए जिंदगी तो एक बार जरूर सुलझाना चाहिए
पूरा हो या न हो, जीवन में बहुत सारे सपने सजाना चाहिए

जिंदगी जख्म है

दर्द है जिंदगी, जिंदगी जख्म है
आस है जिंदगी, जिंदगी प्यास है

कभी खामोश है जिंदगी तो कभी मदहोश है
उदय है जिंदगी, जिंदगी अस्त है

जंग है जिंदगी, जिंदगी तंज है
रंगीन है जिंदगी, जिंदगी बेरंग है

मलंग है जिंदगी है, जिंदगी कलंक है
आगाज है जिंदगी, जिंदगी अंत है

जीवन बदल गया

समय के साथ सब कुछ कितना बदल गया
तुम भी बदल गए और मैं भी बदल गया

राहें बदल गई, मंजिल बदल गए
सोच बदल गए और सपना बदल गया

एहसास बदल गया, रिश्ते बदल गए
जरूरत बदल गई और जज़्बात बदल गया

समय के साथ सब कुछ कितना बदल गया
मन बदल गए और जीवन बदल गया

जून तुम्हारा स्वागत है

मेंहकी फिजायें लाओ तुम सब का दिल बहलाओ तुम
दूरियाँ बढ़ रहीं है लोगों में ठप सारा तिजारत है
खामोश, मायूस है सब अभी कोई नहीं सलामत
एक नए सवेरे की चाहत है जून तुम्हारा स्वागत है

संकट टले हमारे सर से सारे विपदाओं का विनाश हो
खुशी के फूल खिले घर आँगन में गम की न बरसात हो
फिलहाल तो तन्हा हैं हम मुश्किलों से बगावत है
सब का हिफाजत करो तुम जून तुम्हारा स्वागत है

मैं चैन से मर पाता

यादों का बवंडर फूटता है
और एहसासों का सैलाब उफान मचाने लगता है
दिल जोड़ से धड़कता है और सांसें सहम जाता है
थोड़ा सुकून मिलता और मीठा दर्द भी होता है
अंतर्मन में बस यही ख्याल बार – बार आता है
की काश फिर से लौट आता वो पल वो दिन और वो दोस्त
तो जिंदगी सुकून से भर जाती और फिर मैं चैन से मर पाता

सुकून मिलता है

बेबसी के आलम में यहाँ हर कोई मजबूर मिलता है
जब उतरता है सर से मुसीबत का बोझ तो सुकून मिलता है

सुकून मिलता है जब कोई उलझन और तनाव से मुक्त होता है
जब कोई वेदना, संताप, आफत से निजात पाता है तो सुकून मिलता है

सुकून मिलता है जब वैराग्य जीवन में कोई राग मिलता है
जब दुख – दर्द का बादल टलता है तो सुकून मिलता है

बेसक संघर्ष में आँखों से आँसू का संदर बहता है
जब मुकम्मल मंजिल मिलता है तो सुकून मिलता है

शरीर से आत्मा निकल रहा है

अंदर कुछ और चल रहा बाहर से कुछ और हो रहा है
मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा की ये क्या हो रहा है
दिमाग में खलबली मची है दिल सुकून चाह रहा है
कोई खबीस बैठा है सर पे जो बहुत सोर मचा रहा है

साँसे स्थिर है मगर धड़कन तेज हो रही है
धीर – धीरे जिस्म का हर हिस्सा कमजोर पर रहा है
हलचल है अंतर्मन में कंपन अंग - अंग में हो रहा है
बेचैनी बेहिसाब है जैसे शरीर से आत्मा निकल रहा है

शायरियाँ

मैं तो हमेशा तुझे ही याद करता हूँ तुम मुझे क्यों भूल जाने लगे हो
मैं तुम्हारे करीब आना चाहता हूँ तुम मुझ से क्यों दूर जाने लगे हो

❖

बेकार में ही तुमसे जान-पहचान बढ़ा लिया हूँ यार
अब न तुझे पा सकता हूँ न किसी और को चाह सकता हूँ

❖

दिल के लिफ़ाफ़े में प्यार की कहानी भेज रहा हूँ सनम
सिर्फ खत नहीं, मैं पूरी जिंदगानी भेज रहा हूँ सनम

❖

तुझे देख कर लगता है जैसे चाँद जमीं पे आया है
खुदा की कसम खुदा ने तुम्हें कितना हसीन बनाया है

❖

तेरे बिना गुजरते हैं लम्हे जैसे हो अंधेरी रात
तेरे बिना गमगीन है यार मेरे तो सारे जज़्बात

❖

हर गली, शहर, सुबह – शाम दोपहर वीरान सी लगती है
तेरे बिना तो जिंदगी हमारी शमशान सी लगती है

❖

हर कोई कहाँ समझता है मोहब्बत का मतलब
हर कोई मतलब से मोहब्बत करता है साहब

❖

उसके मुस्कुराहट पे दिल लुटाने का ये अंजाम मिला
क्या बतायें दोस्तों जिंदगी को मौत का पैगाम मिला

❖

तेरे इश्क के नशा में मैं ऐसे खो जाता हूँ
जमीं से लेकर फलक तक मैं बस तुम्हें पाता हूँ

❖

जो चेहरे से जाहिर हो उसे तो छुपाया नहीं जाता
किसी के मर्जी के मुताबिक तो मुस्कुराया नहीं जाता

❖

खामोश हो जाता हूँ जब कोई मेरा दिल दुखाता है
अपनों की नाराजगी से दिल चकनाचूर हो जाता है

❖

तेरे ख्यालों में खोया रहता है दिवाना शामों – सहर
मेरे लहू के बूँद - बूँद में है तेरे चाहत का लहर

❖

शायद वो मुझे भूल गई है क्या मैं भी उसे भुला दूँ
उसने मुझे बहुत सताया है क्या मैं भी उसे रुला दूँ

❖

इश्क इबादत है, चाहत खुदा है और पूर्ण विश्वाश ही बंदगी है
प्यार है तो हर रिश्ता हर वस्ल महफूज है एहसास ही जिंदगी है

❖

तेरे बिन गुजरते लम्हे जैसे अंधेरी रात
तेरे बिन तो गमगीन है मेरे सारे जज़्बात

❖

मेरे   दिल में जान नहीं है अगर मेरे तकदीर में तेरा नाम नहीं है
तुमसे बिछड़ कर मर जाऊंगा तेरे सिवा मेरा कोइ अरमान नहीं है

❖

तेरे मतवाले नैनों ने मेरे   जिगर को घायल किया
इश्क में पागल मुझे तेरी बिंदीया, और पायल किया

❖

दिल्लगी   में अपने आँखों से आँसू का दरियाँ बहाना नहीं है मुझे
मोहब्बत में मिलता है धोखा अब किसी से दिल लगाना नहीं है मुझे

❖

झूम-झूम कर तुम्हारे चाहत में शराब तो बहुत पिए हैं मैं खाने में
पर तेरे नैनों से जो नशा चढ़ा वो जाम न मिला सारे जमाने में

❖

जिसके लिए बदनाम हुए जमाने से
वो मुझे छोड़ गए किसी बहाने से

दस्तूर – ए- दिलगी में वफ़ा नहीं मिलता है
किसी को चाहने का फ़लसफ़ा नहीं मिलता है

❖

दर्द ही दर्द में जीते रहे अपने जख्मों पर मरहम किस से लगवाते
हर कोई डूबा था गम के समंदर में अपनी तकलीफ हम किसे सुनाते

❖

तुझे मुझ पर एतबार नहीं तेरे अलावा मुझे किसी और से प्यार नहीं
तेरे चाहत में मैं तड़प रहा हूँ मेरा प्यार तुम्हें क्यों स्वीकार नहीं

❖

तन्हा रहना है मंजूर मुझे मगर मोहब्बत में कभी न पड़ेंगे हम
सुना है की प्यार में मिलता है बहुत धोखा इश्क कभी ना करेंगे हम

❖

तुम से उम्मीद है बहुत कुछ उसको तोड़ना मत
मेरे जिंदगी में आकर तुम मुझे छोड़ना मत

❖

आज से मैंने मोहब्बत का किस्सा ही खतम कर दिया
दिल को जलाकर दिल से इश्क का हिस्सा ही खत्म कर दिया

❖

आजकल मैं बहुत ही खफा हूँ खुद से
किसी खुदगर्ज को खुदा समझ लिया था

❖

जब हम मिले थे तो ऐसा लगता था जैसे हम सारी उम्र साथ रहेंगे
और बिछड़े तो ऐसे बिछड़े यार जैसे की हम कभी मिले ही नहीं थे

❖

सुरत का क्या है साहब वो तो वैसे एक वक्त पे बदल ही जाता है
सीरत जिसकी अच्छी होती है उस से एक दिन इश्क हो ही जाता है

❖

सच कहूँ, इरादा मैंने किया था छोड़ वो गए
तबीयत मेरा खराब हुआ अफसोस मर वो गए

❖

ना नींद आती है रातो में, न दिल को करार मिलता है
ना तो तुम मिलती हो कभी ना ही तेरा प्यार मिलता है

❖

उसके दिल से उतर जाने का तो मुझे गम नहीं है यार
दर्द इस बात से है की उसके दिल में उतरा ही क्यों था

❖

मैं रातों को दिन और दिन को रात बना रखा हूँ
मोहब्बत में मैं तो तुम्हें मुमताज बना रखा हूँ

❖

सिर्फ यादें बनाना ही जरूरी नहीं है यारों
यादों में एहसास होना भी जरूरी है दोस्त

❖

जो लड़का तेरे एक इसारे पे जान देने को हमेशा हाजिर था
लेकिन अब तुम मर भी जाओगे तो वो तुम्हें मुड़कर नहीं देखेगा

तेरी मुस्कुराहट तो मेरे जीने की वजह है
पर मरता तो मैं तेरी मासूमियत पर हूँ यार

❖

मेरी बाँसुरी तेरे बिना कोई सुर ना साधे
समझों, हे राधे मैं तेरे बिना हूँ पूरे आधे

❖

मेरी और तेरी मोहब्बत में बस फर्क इतना हीं है
की तुम सब पे मरते हो और मैं सिर्फ तुम पे मरता हूँ

❖

तेरे इश्क के खातिर मैं दुनियाँ से भी लड़ जाऊंगा
अगर तुम कहो तो मैं तेरे मोहब्बत में मर जाऊंगा

❖

दूर होने पर ही नजदीकियों का एहसास होता है
और याद उसी की आती है जो दिल के पास होता है

❖

उससे मैं खुशी की उम्मीद कैसे कर सकता हूँ
जिसके साथ मेरा रिश्ता दुखों से ही बंधा है

मुझसे अलग होकर शायद तुम खुश तो बहुत रहोगे यार
लेकिन मुझे खोने का अफसोस तुम्हें उम्र भर रहेगा

❖

टूट गया जो दिल मेरा फिर कभी जोड़ नहीं पाऊँगा
तेरे बाद इतनी सिद्दत से अब किसी को ना चाहूँगा

❖

वो लड़का अब ख्वाबों में जीने लगा है साहब
जिसको जमाने की हकीकत ने रुलाया बहुत है

❖

जिसके चाहत में समझा था प्यार का परिभाषा
उसने ही कर दिया मेरे मोहब्बत का तमाशा

❖

तेरे खातिर कर देता हूँ मैं अपने ख्वाहिशों की किलिंग
जिसे तुम शायरी कहते हो असल में वो है मेरी फिलिंग

❖

ना चाकू ना खंजर न किसी हथियार से मरा मैं
उसके कातिल निगाहों के इख्तियार से मरा मैं

❖

जिस हवा से मर जाते हैं लोग यहाँ, कहीं तुम्हें वो हवा न लग जाए
मुझे खून की आँसू रुला रहे हो कहीं तुम्हें बदुआ ना लग जाए

❖

लोग जिसे इश्क कहते हैं मैं उसे इबादत जानता हूँ
और मैं तुझे अपने मोहब्बत का मसीहा मानता हूँ

❖

चलो ठीक है अब तुम्हारे रास्ते में मैं दुबारा कभी नहीं आऊँगा
चाहूँगा तुम्हें पहले से भी ज्यादा मगर तुम्हें कभी नहीं बताऊँगा

Motivational quotes

मंजिल से मोहब्बत हो गई है अब मुश्किलें भी सुहाना लगता है
मेहनत हमसफ़र बन गया है तकलीफों से अब डर नहीं लगता है

❖

सिर्फ हमे अपने ताकत को ही मजबूत नहीं
बल्कि अपने कमजोरी को भी दूर करना चाहिए

❖

किसी के जैसे बनने की कोशिश मत करो
खुद को अलग बनाने का प्रयत्न करो

❖

अपने उपड़ होने वाले अन्याय को दूर करना भी एक न्याय पैदा करना है
इसलिए पहला न्याय यही है की अपने उपड़ होने वाले अन्याय को दूर करो

❖

वो मखमल ही क्या जिसपे नींद न आए
लोग तो चटाई पे भी चैन की नींद सो लेते हैं
महलों की ख्वाहिस मे क्यों रोते रहते हो
लोग तो झोपड़ी मे भी सुकून से जी लेते हैं

❖

किसी चीज को पाने की तैयारी तब तक पूर्ण नहीं मानी जा सकती है
जब तक की आप उस चीज को पूर्ण रूप से हासिल न कर लें

❖

दुख के बिना सुख का सही परिभाषा नहीं समझा जा सकता है
यानी की जो दुख के दौर से नहीं गुजरा वो सुख की कदर नहीं कर सकता है

❖

खुद को इतना मजबूत बनाओ की प्रॉब्लेम को भी
तुम्हारे करीब आने से पहले प्रॉबलेम हो जाए

❖

बुरा वक्त है जनाब खुद को बचाया जाय
मुश्किलों के मंजर मे भी दिल से मुस्कुराया जाय

❖

सब का साथ देकर सब को आबाद कर दिए
बाद में पता चला हम खुद ही बर्बाद हो गए

❖

जिंदगी इस कस्मकस से गुजर रही है जैसे गेहूं चक्की मे पिस रही है
फूलों की तरह कोमल नहीं है ये मगर पत्थर की तरह घिस रही है

❖

आपके साथ जो खुश है आप भी उसके साथ खुश रहो क्योंकी
आप जिसके साथ खुश रहना चाहते हैं वो किसी और के साथ खुश है

❖

हालात से लाचार हो तो कोई बात नहीं मगर जो विचार से
लाचार हो गए तो समझ लीजिए उसका विनाश आरंभ हो गया

❖

जिंदगी को जितने ख़ुशी से जी सकते हो जी लो
अगर इसे समझने बैठे तो उलझ कर मर जाओगे

❖

निकले थे गमों के मेले मे खुशियों के सौगात लेकर
खुशियां तो बिक गई और हम लौटे खाली हाथ लेकर

❖

शिकवा नहीं मुझे किसी से न खुद से गिला है
जिंदगी जीना है ऐसे, जैसे सब कुछ मिला है

❖

हम मेहनत करते हैं कोई मजाक नहीं
और मुश्किलें हमे हरा दे इतनी उसकी औकात नहीं

अभी तुम कमजोर हो इसलिए जिंदगी बोझ लग रही है
जब मजबूत हो जाओगे फिर देखना, जिंदगी खेल लगने लगेगी

❖

खिलाड़ी बनो यार कब तक दर्शकों के बीच मे बैठ कर देखते रहोगे
कुछ ऐसा करो की फिर दर्शक बैठ कर तुम्हें देखते रहें

❖

देखो सहायता करना बुरी बात नहीं है लेकीन किसी को मदद करने के
चक्कर मे अपना सब कुछ गवां देना ये भी कोई अच्छी बात नहीं है

❖

तबीयत तो हर किसी का खराब हो जाता है
ध्यान इतना रखना है की किसी का नियत खराब न हो

❖

जज़्बातों मे फँसकर अपने समय को बर्बाद मत करो
क्योंकी अब दुनियाँ औकात देखती है जज़्बात नहीं

❖

सोचने वाली बात है सब अपने बारे मे कम
और दूसरों के बारे मे ज्यादा सोचते हैं

❖

इंसान तो बहुत है दुनियाँ मे लेकिन इंसानियत मिलना मुश्किल है
मासूम चेहरे सब रखते हैं लेकिन मासूमियत मिलन मुश्किल है

❖

अरे जिंदगी क्या हराएगी मुझे
मुझे हराते हराते वो खुद हार जाएगी

❖

जिंदगी की परेशानियों से कब तक परेशान होते रहोगे
खुद को इतना मजबूत बनाओ की परेशानियाँ तुमसे परेशान हों जाए

❖

प्रेक्टिस करने से कभी परेशान मत हुआ करो
क्योंकी प्रेक्टिस करने से हीं इंसान परफेक्ट बनता है

❖

जिंदगी जीना इतना हीं मुश्किल है
तो फिर लोग मरने से इतना क्यों डरते हैं

❖

मैगी थोड़ी है जो फटाफट दो मिनट में तैयार हो जाए
ये जिंदगी है साहब इसे बनाने मे पूरी जिंदगी लग जाती है

❖

इंसान कभी गलत नहीं होता है बस गलत हालातों
के वजह से वो सही साबित नहीं हो पाता है

❖

जब सपने बड़े है तो चुनोतिया कैसे छोटी हो सकती है
और जो चुनोतीयों को चुना लगा दे उसके सपने जरूर पूरी होती है

❖

अभी तो इम्तिहान हुआ है अंजाम अभी बाकी है
फिलहाल तो हम सफर में हैं मुकम्मल मुकाम अभी बाकी है

❖

अपने फितरत को इतना मजबूत बनाओ
की आपकी किस्मत भी मात खा जाए

❖

धोखा तो सब देते हैं और सब कभी न कभी धोखा खाता भी है
लेकिन सबसे ज्यादा बर्बाद वो होता है जो खुद से खुद को धोखा देता है

❖

कुछ सपने को हमने इसलिए मार दिया क्योंकी पापा के पास पैसे नहीं थे
अब इतना पैसा कमाना है की पापा के मरे हुए सारे सपने जिंदा हो जाए

❖

बनना ही है तो हुनरबाज बनो यार क्योंकी
हुनर का सितारा जब चमकेगा दुनियाँ तुम पे फिदा हो जाएगी

❖

लोगों की बातों मे आकर अपना इरादा मत बदलों
लोगों की बातों को अपने मेहनत से मात दे दे

मेहनत इतनी बारीकी से करो की
सफलता मे कोई कसर न रह जाए

❖

धोखा खाने के बाद कितनी तकलीफ होगी
ये इस बात पर निर्भर करता है की धोखा किसने दिया है

❖

लगता है कुछ अच्छा परिणाम मिलने वाला है
जिंदगी बड़े कठिन इम्तिहान ले रही है

❖

एक चीज तो सब के पास है और वो है दर्द फिर
पता नहीं लोग एक-दूसरे का दर्द क्यों नहीं समझते हैं

❖

अगर कोई आपको नहीं समझ पा रहा तो इसमे आपकी कोई गलती नहीं है
क्योंकी वो आपको समझ सके इतना वो अभी समझदार नहीं है

❖

लोग आपके बारे मे कमेन्ट बेसक निगेटिव करे
लेकिन कोशिश कीजिए की फीडबैक हमेशा पॉजिटिव आए

❖

बड़ी बड़ी बाते करने से कोई बड़ा नहीं बन जाता है
बड़ा बनने के लिए बड़े-बड़े काम करने परते हैं

❖

होशियार सिर्फ वही नहीं होता है जो मौका का फाइदा उठता है
असली होशियार वो होता है जो मौका खुद से पैदा करता है

❖

जब रिस्क से इश्क हो जाता है
तब मंजिल महबूबा बन जाती है

❖

आप दस को खुश नहीं कर सकते हैं लेकिन किसी
एक को तो दुखी होने से जरूर बचा सकते हैं

❖

समस्या को कोसने से अच्छा है समाधान पर विचार
करें और अपने जीवन के हर मुश्किल को आसान करें

❖

यदि आप किसी का सम्मान नहीं कर
सकते है तो उसका अपमान भी न करें

❖

कोई भी ऐसा काम मत करो जिससे दूसरों
को दुख पहुंचे और खुद को भी तकलीफ हो

❖

नशा इश्क का नहीं, मोहब्बत मंजिल से हो गई है
हम रात मे महबूबा के लिए नहीं मंजिल पाने के लिए जगते है

❖

किसी के इश्क मे पागल होने से अच्छा है अपने लक्ष्य के लिए पागल हो जाओ
फिर दुनियाँ निकम्मा आशिक नहीं, बाजीगर और बादशाह कह कर बुलाएगी

❖

बेसक हमारा कच्चा मकान है मगर जिंदगी में हमें बहुत आराम है
तुम महलों में नींद की दवाई लेते हो हम झोपड़ी में चैन से सोते हैं

❖

जो मेहनत का दामन छोड़ देता है
उसे कभी भी मंजिल का आँचल नहीं मिलता है